UNIVERSAL
LIBRARY
OU_180021
UNIVERSAL
LIBRARY

चीन की आवाज़

लेखक

सुन्दरलाल

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

इलाहाबाद.

1952] [चार आना

क्या—क्या ?

अरज़

१. चीन की सैर १

२. कैन्टन में स्वागत ६

३. शान्ति का आन्दोलन १०

४. पेकिंग रेडियो से ब्राडकास्ट १३

दुनिया की शान्ति के अलमबरदार १५

६. चीन को अलविदा २१

७. हिन्द और चीन का कलचरी मेल २५

८. चीन की अवाज़ ३३

चीन की सैर

पिछले सितम्बर में हमें नई दिल्ली में चीनी दूतवास की मारफ़त चीन की कई लोक संस्थाओं की तरफ़ से दावत नामे मिले कि हम चीनी लोक राज की दूसरी सालगिरह के मौक़े पर होने वाले जलसों में शरीक हों. यह दावतनामे हमने मंज़ूर कर लिये लेकिन हमारे पास समय बहुत कम था. फिर भी अलग अलग सूबों से सम्बन्ध रखने वाले अलग अलग लोगों को चीन जाने वाले गुडविल मिशन में शामिल करने की कोशिश की गई. मिशन के अकसर मेम्बर जैसे डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा, सदर कुल हिन्द ग्राम उद्योग संघ, वर्धा, डाक्टर वी. के. आर वी. राव, डायरेक्टर देहली स्कूल आफ़ एकोनामिक्स और श्रीमती हन्ना सेन, सदर कुल हिन्द वीमन्स कान्फ़रेन्स, आज़ाद तबक़े और ख़्याल से सम्बन्ध रखने वाले थे. मिशन में किसी कम्यूनिस्ट मेम्बर को शामिल नहीं किया गया था. यह इसलिये किया गया कि ख़याल था कि कुछ निशपक्ष या ग़ैर-जानिबदार हिन्दुस्तानी चीन देश जायें और ख़ुद वहां के हालात को देखें. सरकार और चीन की अलग अलग संस्थाओं की तरफ़ से हमारा बहुत शानदार स्वागत किया गया. जहाँ कहीं हम गए, चीनियों ने अपनी मेहमाँ-नवाज़ी की हद कर दी और इस बात का उन्होंने ख़ास तौर से ध्यान रखा कि हमें कोई तकलीफ़ न होने पाए.

हम चीन के सात बड़े बड़े शहरों में गए—(१) कैन्टन (२) पेकिंग, (३) मुकदन, (४) टिनसिन, (५) नानकिंग, (६) शंघाई और (७) हांग-चू हमने चीन की यूनिवर्सिटियां देखीं, हम वहाँ के स्कूलों और कालिजों में गए, कारखानों में गए—उनमें भी जो सरकारी मिल्कियत थे और उनमें भी जो निजी मिल्कियत थे. हम वहाँ के बाज़ारों में घूमे, हमने चीन की अदालतें देखीं और यह देखा कि वहाँ मुक़दमों के फ़ैसले किस तरह किये जाते हैं. हमने चीन की अलग अलग संस्थाओं को देखा और उन संस्थाओं से ताल्लुक़ रखने वाले लोगों और दूसरे असरदार चीनियों से बातचीत की. हमने चीन के सिनेमा देखे, उनके थेटरों में हम गए और उनकी खेती बाड़ी और दस्तकारी की नुमाइशों को देखा, जिनमें देहाती दस्तकारियों की नुमाइशें भी शामिल थीं. मुख़्तसर यह कि हमने वह सब कुछ देखा जो हम अपने थोड़े से दिनों के दौरे

में देख सकते थे. हम चीन में चालीस दिन ठहरे और सच यह है कि इस अरसे में बेहद मसरूफ़ रहे. हमारे कहीं आने जाने, उठने बैठने पर कोई पाबन्दी नहीं थीं. हम जहाँ चाहे जा सकते थे और जो देखना चाहते देख सकते थे. चीनी जनता और चीनी हाकिम भी हमसे खिंचे || खिंचे न रहते थे. हमने जो कुछ भी जानकारी हासिल करनी चाही उसमें उन्होंने हमें पूरी पूरी सहूलियत दी.

दो साल की तरक़्क़ी.

पिछले दो साल के अन्दर चीन ने जो कुछ किया उसका हम पर बेहद असर पड़ा. जापानी क़ब्ज़े के बीच और बाद में कोमिंटांग राज में देश की समाजी और आर्थिक ज़िन्दगी का ढाँचा बिलकुल टुकड़े टुकड़े हो गया था. चीन के नेताओं को बिलकुल नए सिरे से अपने देश को बनाना पड़ा. इन दो बरसों के अन्दर वह अपने बरबाद हुए उद्योग धंदों को बहाल करने और मुल्क के आर्थिक निज़ाम को संवारने में सफल हो गए हैं. रिश्वत खोरी बन्द कर दी गई है और अब वही अफ़सर जो दो साल पहले तक दुनिया के सब मुल्कों से ज़ियादा घूसख़ोर थे, पारसा बन गए हैं. यही नहीं, सब मिला कर जनता का सदाचार भी बहुत ऊंचा हो गया है. इसका सबूत इस बात से मिलता है कि इतने लम्बे चौड़े और महान देश से वेश्याओं और भिकमगों का बिलकुल ख़ात्मा हो चुका है. खेती में सुधार किया गया है और जिन लोगो के पास ज़मीनें नहीं थीं उन्हें ज़मीनें दे दी गई हैं और अब देश की पैदावार इतनी बढ़ गई है कि जो देश सिर्फ़ चन्द साल पहले तक दूसरे देशों से ग़ल्ला मंगाता था अब लाखों टन ग़ल्ला दूसरे देशों को भेजता है. उद्योग धंदों के मैदान में भी उसने इतनी तरक़्क़ी की है कि अब वह ज़िन्दगी के हर क्षेत्र में अपनी ज़रूरत आप पूरी कर लेता है.

समाजी सुधार.

चीन में समाजी सुधार भी हुए हैं. ख़ास तौर पर औरतों के सिलसिले में बहुत सुधार हुआ है. चीनी औरत को, जो किसी ज़माने में एक जागीर समझी जाती थी, बराबर के हक़ दिये गए हैं. शादी के बारे में नया क़ानून बनाया गया है और एक से ज़ियादा पत्नी घर में रखने की मनाही कर दी गई है. बेरोज़गारी को ख़त्म करने की कोशिश की जा रही है और जीवन के हर मैदान में मालदारों और ग़रीबों, मालिकों और नौकरों, आक़ा और ग़ुलामों के फ़र्क़ को

मिटाया जा रहा है. क़ीमतों को एक सतह पर टिकाया जा रहा है और पैदावार बढ़ा कर सिक्के की बढ़ती के मसले पर क़ाबू पाने कि कोशिश की जा रही है.

चीन कम्यूनिस्ट देश नहीं है.

यहां हिन्दुस्तान में हम से कहा जाता है कि चीन एक कम्यूनिस्ट देश है. हम इस बात को ऐन मौक़े पर पहुँच कर देखना चाहते थे. हमने देखा कि पूरे मुल्क में निजी मिल्कियतों और निजी मिल्कियत वाले कारख़ानों को बढ़ाया जाता है. यही नहीं बल्कि सरकार इन निजी कारख़ानों के वास्ते कच्चा माल भी मोहैया करती है और इस बात की ज़मानत देती है कि उनका तैयार किया हुआ माल बेचा जाएगा. विदेसी पूँजी लगाने के लिये भी काफ़ी गुंजायश है. हमने टिनसिन, शंघाई और दूसरी बहुत सी जगहों पर अंगरेज़ फ़र्मों को काम करते देखा. हमने ख़ास तौर से छान बीन की और हमें बताया गया कि चीन के अन्दर ऐसा कोई एक भी कारख़ाना या ज़मीन नही जो समाजवादी ढंग की मिल्कियत हो. नए चीन की हकूमत कोई कम्यूनिस्ट हकूमत नहीं है और न वह एक पारटी की सरकार है बल्कि वह केवल एक मिली जुली पारटी की सरकार है जिस में देश की तमाम पारटियों के नुमाइन्दे शामिल हैं. सरकार में ऐसे मेम्बरों की गिनती सिर्फ़ एक तिहाई है जिनके बारे में दावे से कहा जा सके कि वह कम्यूनिस्ट हैं. लेकिन अगर इसके बाद भी यह कहा जाए कि चीन एक कम्यूनिस्ट मुल्क है तो मैं कहूँगा कि चीन का कम्यूनिज़्म 'चीनी कम्यूनिज़्म' है जिस में जनता की 'पुरानी परम्पराओं को बनाए रखा गया है और जो चीन की तासीर के मुताबिक़ है.

क़ानूनी अदालतें.

चीन ने अपनी क़ानूनी अदालतों में इन्क़लाबी तबदीली की है और वकालत के पच्छिमी तरीक़े को एक दम बदल दिया हैं. किसी ज़माने में केवल शंघाई शहर में बारह सौ वकील रहा करते थे. लेकिन आज वहाँ एक भी वकील नहीं है. इन सबको दूसरे महकमों में ले लिया गया है और सिर्फ़ पाँच बहुत क़ाबिल वकीलों को सरकार ने ख़ुद नौकर रख लिया है जिन से पेचीदा मामलों में सलाह ली जाती है. इस तरह न सिर्फ़ यह कि चीन से मुक़दमे बाज़ी की बीमारी दूर हो गई है बल्कि अब मुक़दमों के फ़ैसले भी बहुत जल्द हो जाते हैं और इन्साफ़

सस्ता हो गया है. चीनी सरकार मुजरिमों का सुधार ट्रेनिंग दे कर भी करती है और सज़ा देने के मुक़ाबले में उनको सदाचार की शिक्षा भी देती है. नई चीनी सरकार ने उन लोगों तक को माफ़ कर दिया है जिन्होंने कोमिंटांग सरकार से हथियार लेकर नई सरकार से जंग की थी. इसका नतीजा यह है कि वह नई सरकार के सबसे बड़े वफ़ादार बन गए हैं.

तनख़ाहें.

चीन में तनख़ाहें सिक्के की बुनियाद पर नहीं बल्कि ग़ल्ले की बुनियाद पर दी जाती हैं. जिन कारख़ानों में हम लोग गए, हमने देखा कि आम मज़दूरों और मैनेजर या डायरेक्टर की तनख़ाहों में तीन और आठ का अनुपात (तनासुब) था. एक बिस्कुट फैक्टरी में जहाँ एक मज़दूर लड़की महीने में ढाई सौ यूनिट तनख़ाह ले रही थी, फैक्टरी के डायरेक्टर की तनख़ाह साढ़े तीन सौ यूनिट थी. सरकारी महकमों में कम से कम तनख़ाह डेढ़ सौ यूनिट और ज़ियादा से ज़ियादा तनख़ाह साढ़े तीन सौ यूनिट है. इसी तरह का फ़र्क़ एक यूनिवर्सिटी के वाइस-चान्सलर और एक चपरासी में है. चेयरमैन माओ-त्से-तुंग की तनख़ाह भारत के राष्ट्रपति की तनख़ाह के मुक़ाबले में सोलहवाँ हिस्सा है. इस लिहाज़ से हम चीन के अन्दर हर किसी कारख़ाने के मज़दूर और मैनेजर में, एक यूनिवर्सिटी के वाइस-चान्सलर और एक चपरासी में पोशाक वग़ैरा के लिहाज़ से कोई फ़र्क़ नहीं कर सकते.

चीनी हाकिम देसी उद्योग धंदों को बढ़ावा देते हैं. पेकिंग में हमने एक पूरा बाज़ार ऐसा देखा जहां हाथ का बना हुआ कपड़ा बिकता है. कुछ देहातों में हमने देखा कि लोग हाथ से कपड़ा बुन रहे थे और उनकी औरतें पुराने तरीक़े पर कात रही थीं. हमने एक बड़ी नुमायश देखी जहां हाथ से तैयार की जाने वाली चीज़ें रखी हुई थीं.

मज़हबी आज़ादी.

चीन में पूरी मज़हबी आज़ादी हासिल है. हमने मसजिदें देखीं जहाँ बाक़ायदा नमाज़ अदा की जाती थी, हमने सिक्खों के गुरुद्वारे भी देखे जहाँ ग्रन्थ साहब रखा हुआ था और उसे उसी तरह पढ़ा जाता था जैसे हिन्दुस्तान में. हमने बड़े बड़े बौद्ध मंदिर भी देखे जहाँ बड़ी बड़ी मूर्तियां रखी हुई थीं. हांग-चू में ऐसे ही एक मंदिर की छत गिर पड़ी थी. हमने देखा कि हकूमत के पैसे से उसे नए सिरे से बनाया जा रहा है.

मैं यह असर लेकर और संतुष्ट हो कर चीन से वापस आया हूँ कि नया चीन और नए चीन के नेता एशिया की हर क़ौम के साथ पुर अमन तौर पर रहना चाहते हैं. चीन का ज़ियादा ध्यान सिर्फ़, जंगी सामान बनाने की तरफ़ ही नहीं है बल्कि ऐसे सामान की तरफ़ भी ध्यान दिया जा रहा है जो रोज़ के इस्तेमाल में आते हैं. इसका कारन यही है कि चीन में कोई जंग को पसंद नहीं करता.

मैं यक़ीन रखता हूँ कि नया चीन हिन्दुस्तान के मुक़ाबले में उन असूलों के ज़ियादा क़रीब है जिनका प्रचार महात्मा गांधी करते थे. आज जो हमें अपने मुल्क में मिलती हैं उनमें से बहुत सी बुराइयाँ दो साल पहले चीन में भी देखने में आती थीं. मुझे इस बारे में ज़रा भी संदेह नहीं कि अगर हिन्दुस्तान में हम उन बुराइयों को दूर करने की इच्छा, रखते हों तो हम नए चीन से बहुत कुछ सीख सकते हैं.

कैन्टन में स्वागत

(२२ सितम्बर १९५१ को)

"पहली अक्तूबर १९५१ को हमारे पड़ोसी देश, चीन के नए लोकराज की दूसरी सालगिरह है. इस मौके पर अपने चीनी भाई बहनों को हिन्दुस्तान की जनता की तरफ़ से बधाई देने के लिये यह मिशन चीन आ रहा है. हमारे मिशन में हिन्दुस्तान के सब हिस्सों के लोग हैं और जुदा जुदा रोज़गार या काम करने वाले हैं. आपके महान देश में हम इस वजह से आए क्योंकि हम इससे प्रेम करते हैं और हमारे दिल में इसकी इज़्ज़त है. हम दोनों में रिश्ता आज का नहीं बीस सदी या दो हज़ार बरस से ऊपर का है. यह रिश्ता बड़े प्रेम और भाई चारे का क़रीबी रिश्ता है. सच यह कि हिन्दुस्तान के पुराने इतिहास का काफ़ी हिस्सा उन बयानों के आधार पर तैयार किया गया है जो आपके सरनाम सफ़ीर, ह्वान सांग और फ़ाहियान लिख कर छोड़ गए हैं. हमारे देश के एक विद्वान प्रोफ़ेसर डाक्टर पी. सी. बागची ने "हिन्दुस्तान और चीन" नाम की एक किताब लिखी है. उसके लिये बरसों वह आपके देश में रहे और खोज करके जानकारी हासिल की. दुर्भाग्य से उनकी तबियत आजकल अच्छी नहीं है, इस लिये वह हमारे साथ न आ सके.

"चीनी के बरतन हिन्दुस्तान क्या, दुनिया भर में मशहूर हैं. इसी तरह से आप के यहां का रेशम लासानी है. चीनी कलाकारों और दस्तकारों के काम की तारीफ़ हमेशा से ही दुनिया भर में होती रही है, चित्रकारी में भी चीन का मुक़ाबला कोई नहीं कर सकता है. लेकिन शायद सारे पूरब को जो चीन की सबसे बड़ी देन थी, वह है—कागज़ बनाना—यह काम हिन्दुस्तान ने दसवीं सदी में आपसे सीखा था.

"बारहवीं सदी के आते आते हिन्दुस्तानियों की विदेश घूमने की आदत छूट सी गई. तुरकी राज के ज़माने में सिन-क्यांग में हो कर जाने वाला ख़ुश्की का रास्ता बन्द हो गया. इस बारे में ज़्यादा जानकारी मशहूर अंगरेज़, मरहूम सर ओरेल इस्टाइन की किताबों से मिलती है, साइन-इन्डिया नाम से इन्होंने कई जंगी किताबें लिखी हैं. तकला मकन के रेगिस्तान में भी उन्होंने खोजें कीं. उन से पता चलता है कि उस ज़माने में दोनों देशों में कितना गहरा कलचरी ताल्लुक़ था.

"मेरा मिशन ही नहीं बल्कि हिन्दुस्तान के लोग यह चाहिते हैं क यह ताल्लुक़ फिर पैदा किया जाए. लेकिन केवल समाजी और कलचरी दायरे में ही नहीं, आज कल की दुनिया के मुताबिक़ राजकाजी और आर्थिक दायरों में भी यह ताल्लुक़ पैदा किया जाए. मैं जानता हूँ कि दोनों देशों की भाशा अलग अलग होना इसमें एक बड़ी रुकावट साबित होती है लेकिन इस रुकावट पर हम हावी हो जाएगे. वह दिन दूर नहीं जब चीनी ज़बान और साहित्य के महकमे हमारी सभी यूनिवर्सिटियों में खुल जाएंगे. इस सम्बन्ध में शान्ति निकेतन यूनिवर्सिटी ने, जिसे स्वर्गवासी डाक्टर रवीन्द्र नाथ टैगोर ने क़ायम किया था, क़दम उठाया भी है.

"जहाँ तक शान्ति का और तीसरी दुनिया-व्यापी लड़ाई के ख़तरे का सवाल है, हम हिन्दुस्तान के लोग सोलह आने शान्ति के हामी हैं. हमारे देश के महान नेता महात्मा गांधी ने जो पाठ पढ़ाया है उससे हमें यही प्रेरना मिलती है. इसके अलावा हिन्द सरकार की एलानिया नीति ही अन्तर क़ौमी शान्ति है और यही चीनी लोक राज की भी एलानिया नीति है. लेकिन शान्ति की वकालत के यह माने हरगिज़ नहीं लगाए जा सकते कि अगर किसी रूप या शकल में हम दोनों लोगों के मुल्क पर बाहर से कोई चढ़ाई या हमला करे तो हम उसका मुक़ाबला करने के इरादे में ही कमज़ोर पड़ जाएंगे. चीनी लोकराज के मुखिया सेना पति जनरल चू-तेह साफ़ साफ़ कह चुके हैं कि चीन के पिछले सभी इलाक़ों को हम एक करके रहेंगे. इस बड़े काम में हम हिन्दुस्तान वालों की शुभ कामनायें आपके साथ हैं. दुनिया में शान्ति का मतलब है कि भाई चारे की बिना पर सारी दुनिया के रहने वालों का संगठन खड़ा किया जाए, अन्तर क़ौमी झगड़े, तय करने के लिये लड़ाई के साधन को ख़ारिज कर दिया जाए, सब तरह की शाहियों को, जैसे जागीरशाही, मुल्कशाही, साम्राजशाही, चाहे वह पूंजी के ज़ोर पर चलती हों या हकूमत के ज़ोर पर, ख़त्म कर दिया जाए, और सब देशों को यह हक़ हासिल हो कि वह जैसी चाहें सरकार बनाएं. उनके इस हक़ में कोई भी दख़ल नहीं देगा. मैं जानता हूं कि दूसरे देशों की तरह हिन्दुस्तान में भी कुछ लोग ऐसे हैं—जैसे गद्दी से हटाए गए रजवाड़े, पूँजीपति वग़ैरा—जो अमरीकी या अंगरेज़ी पूंजीपतियों के साथ मिलकर जनता को अब भी चूसना चाहते हैं और यह सोचते हैं कि अगर दुनिया भर में लड़ाई छिड़ जाए तो इससे उन्हें फ़ायदा होगा. लेकिन ऐसे लोगों का असर आम जनता मे रत्ती भर भी नहीं है और न हमें इसे कोई अहमियत देनी चाहिये. आप इतमिनान रखिये कि हिन्दुस्तान हमेशा शान्ति का अलमबरदार रहेगा.

हिन्दुस्तान जानता है कि "लड़ाई से" जैसा कि हमारे बड़े वज़ीर पंडित जवाहर लाल नेहरू कहा करते हैं, "कोई सवाल हल नहीं हुआ करते."

जब यह पूछा गया कि चीनी लोकराज के बारे में आपका क्या ख़याल है तो पंडित जी ने जवाब दिया:

"मेरा क्या सभी हिन्द बासियों का ख़याल दो मोटे मोटे उसूलों के आधार पर बना करता है. पहले यह कि चीन में कैसी सरकार क़ायम हो इसका फ़ैसला सिर्फ़ चीनी ही कर सकते हैं—वही और सिर्फ़ वही यह फ़ैसला करने के लिये सबसे बढ़ कर और आला मुन्सिफ़ हैं. किसी दूसरे को इस मामले में नहीं पड़ना चाहिये. आपने अपने देश में एक बहुत बड़ी क्रान्ति की और दुनिया को जता दिया कि अपने चेयरमैन माओ-त्से तुंग के बतलाए नए लोकराज के उसूलों में आप का विश्वास हैं. हिन्दुस्तान दिल खोल कर चीनी लोकराज का स्वागत करता है. हम मानते हैं कि चीन दुनिया की एक बड़ी ताक़त बन गई है जो शान्ति और तरक़्क़ी की पैरोकार है और हमारी दुआ है कि आप को दिन दूनी रात चौगुनी ख़ुशी और कामयाबी हासिल हो और आप सदियों फूलते फलते रहें.

"दूसरे, हम दोनों देशों के आपसी भाईचारे पर पारटीबाज़ी की या स्वार्थी विदेशी ताक़तों की दख़ल-अन्दाज़ी की हवा के झोकों का कोई असर नहीं पड़ना चाहिये. हिन्दुस्तान से जो बन सका वह उसने किया ताकि सब मुल्क चीन की नई सरकार को चीन की असली सरकार मान लें. फ़ारमूसा या तेवान के हाकिमों को कुल चीन की सरकार का नुमाइन्दा मानने के ख़िलाफ़ हिन्दुस्तान ने हमेशा ही आवाज़ उठाई है. अगरेज़ी क़ानूनदां, प्रोफ़ेसर ओपेन हाइम का कहना है कि किसी नई अन्तर क़ौमी शक्ति को मानना या न मानना आपके मन की बात नहीं है और न सौदे या चोर बाज़ारी की चीज़ है. अन्तर क़ौमी क़ानून या रिवाज के मुताबिक़ किसी सरकार की क़ाबलियत का इक़रार करने के माने यह हैं कि हम क़बूल करते हैं कि फ़लां इलाक़े में वह सरकार और सिर्फ़ वही सरकार सचमुच चलती है और दूसरी कोई नहीं चलती. पूरब या पच्छिम के सभी क़ानूनदानों का यह ख़याल है. हिन्दुस्तान की यह कोशिश हमेशा रहेगी कि चीनी लोक राज को दुनिया की एक बड़ी ताक़त समझा जाए. हम यहाँ पर आपके नए राज को अपनी तरफ़ से सलामी देने आए हैं. आपने जो काम अब तक किये हैं और जो आगे करने का वादा करते हैं वह ताज्जुब जैसे लगते हैं. पिछले दो दिन में आपकी सरकार के प्रोग्राम के कुछ पहलुओं से जानकारी हासिल करने का मौक़ा हमें मिला. हम आपकी कामयाबी चाहते हैं."

जब यह पूछा गया कि चीन के बारे में हिन्दुस्तान में जानकारी कितनी है तो पंडित सुन्दरलाल ने जवाब दिया:

"चीन के बारे में हमारे अख़बारों में ख़बरें आती तो लगातार हैं मगर दूरन्देशी उनमें कम रहती है. इसके मुक़ाबले पेकिंग का विदेशी भाशा प्रेस कमाल का काम कर रहा है. चेयरमैन माओ की किताबें हिन्दुस्तान में छपी हैं और उनके कई कई एडीशन निकल गए हैं. हिन्दुस्तान में ऐसी किताबों की मांग बढ़ती जाती है जिनसे नए चीन के सब हालात मालूम हों. यह मांग पूरी करनी होगी.

"चीनी लोकराज के बड़े बड़े नेताओं के नाम—चेयरमैन माओ-त्से तुंग, जनरल चू-तेह, बड़े वज़ीर चू-आंले, नायब-चेयरमैन लिऊ-शाओ-चीं—बच्चा बच्चा जानता है. हिन्दुस्तान के लोग चीनियों और उनके नेताओं के बारे में ज़ियादा से ज़ियादा जानकारी हासिल करना चाहते हैं. आजकल आपका सुन्दर अख़बार "पीपुल्स चायना" भी सबको नहीं मिल पाता है. पेकिंग के विदेशी-भाशा प्रेस का काम और बढ़ा देना चाहिये."

पंडित सुन्दरलाल से जब यह पूछा गया कि आपको रास्ते में कोई तकलीफ़ तो नहीं हुई तो उन्होंने मुस्करा कर जवाब दिया:

"जब आपके महान यात्री ह्वेन-सांग हमारे देश में आए थे तो राजा हर्श ने उनको ऐसे तोहफ़े दिये थे जो एक राजा ही दे सकता था. अब तेरह सौ साल बाद आप एक हिन्दुस्तानी मिशन का स्वागत कर रहे हैं—ऐसे ज़ोर शोर के साथ ऐसे खुले दिल के साथ, ऐसी मुहब्बत और इज़्ज़त के साथ—जो जनता का लोक-राज ही कर सकता है, जो वही सरकार कर सकती है जो अपनी जनता के काम के अलावा उसके दिल की भी आईना हो."

शान्ति का आन्दोलन

मुझ से कहा गया है कि चीन में 'अमरीकी हमले का मुक़ाबला करो' और 'कोरिया की मदद करो' वाला जो आन्दोलन चल रहा है और शान्ति के लिये हिन्दुस्तान और चीन में जो तहरीक चल रही है उन पर अपनी राय ज़ाहिर करूं. मैं ख़ुशी से "पीपुल्स डेली" के लिये यह लेख लिख कर यह काम कर रहा हूँ. मुझे यक़ीन है कि जो ख़याल मैं ज़ाहिर कर रहा हूँ वही हिन्दुस्तान के ज़ियादा तर लोगों का ख़याल है.

अन्तर क़ौमी मैदान में हिन्दुस्तान हमेशा शान्ति का पैरोकार रहा है. आज भी वह पूरे दिल के साथ शान्ति का पैरोकार है. थोड़ा अरसा पहले हम अंगरेज़ी हुक्कामी और पूँजीवादी साम्राजशाही के पंजे में फंसे थे और हिन्दुस्तान में विदेशी हकूमत का रहना हर हिन्दुस्तानी के लिये शर्म और दुख की बात थी. हम तादाद में तो बहुत थे लेकिन निहत्थे थे. पर चार साल हुए अंगरेज़ी साम्राजशाही के शिकंजे में से हम निकल आए और आज़ाद हुए. हमारी आज़ादी की लड़ाई के रहबर महात्मा गांधी थे जिनकी याद हाल ही में साथी को-मो-जो ने "शान्ति के लिये शहीद" के नाम से की थी. सचमुच महात्मा गांधी शान्ति के बड़े से बड़े अलमबरदारों में थे. किसी भी सूरत या शकल से कोई देश अगर दूसरे पर चढ़ाई करे तो वह हमें नफ़रत की बात लगती है. हमारा विश्वास है कि आज़ादी पसंद हर मर्द औरत का फ़र्ज़ है कि ऐसी चढ़ाई या हमले का मुक़ाबला करने के लिये जो कुछ उससे बन सके करे. चढ़ाई या हमले का अहिंसात्मक ढंग से मुक़ाबला करने का तरीक़ा हमें महात्मा गांधी ने बताया. हम हिन्दुस्तानियों ने उनके तरीक़ों को अपनाया और कमाल की कामयाबी हासिल की. साथ ही साथ महात्मा गांधी की साफ़ राय थी कि जहां जहां अहिंसात्मक तरीक़े की वाक़फ़ियत लोगों को नहीं है या किसी वजह से वह अमल में नहीं लाया जा सकता तो उस देश के लोगों का यह पाक फ़र्ज़ हो जाता है कि चढ़ाई का मुक़ाबला हथियार के बल से ही करें. उन्होंने हमें सिखाया कि हमले के आगे हाथ पर हाथ धर कर बैठ जाना कायरता ही नहीं जुर्म है. इसलिये हम हिन्दुस्तान के लोगों की अपने चीनी भाइयों के साथ पूरी हमदर्दी है. भीतरी और बाहरी हमले के मुक़ाबले में उन्होंने जो मोरचा लिया उसका हम हर तरह समर्थन करते हैं और उनकी सफलता पर उन्हें बधाई देते हैं.

इधर चन्द बरस में अमरीका की दिलचस्पी पूरब के देशों में बढ़ती जा रही है. अमरीका की जो पालिसी है और जो कारनामे हैं उन पर हिन्दुस्तान की पूरी निगाह है. हमें यह देखकर दुख हुआ कि आज कल की सभ्य या शरीफ़ कही जाने वाली सरकारें किस हद तक आपे से बाहर बढ़ती चली जाती हैं. और यह किस लिये? सिर्फ़ इसलिये कि दूसरे देशों पर उनका फ़ौजी और आर्थिक असर क़ायम हो जाए. इस अरसे में कोरिया वालों को जो मुसीबतें उठानी पड़ी हैं और जिन आफ़तों का सामना करना पड़ा उसमें हमारी दिली हमदर्दी उनके साथ है. सारे हिन्दुस्तान की यह इच्छा है कि कोरिया एक हो, वहां पर एक राज हो जिसमें किसी बाहर वाले का कोई असर न हो और अपने सब पड़ोसियों से, ख़ास कर चीनी लोकराज से, भाई चारे का उसका ताल्लुक़ हो.

जहां तक विश्व शान्ति आन्दोलन की बात है, उसमें जो रुख़ चीन ने लिया है हम उसकी ताईद करते हैं, हमने ख़ुद देखा कि चीन के महान नेता, चेयरमैन माओ-त्से-तुंग ने कितने बड़े रचनात्मक काम किये हैं. पिछले दो बरस में उनकी रहनुमाई में चीन ने जो ग़ैर मामूली तरक़्क़ी की है उसे देखकर जहां हमें अचरज होता है वहां बेहद ख़ुशी भी होती है. रचनात्मक आदमी अगर अमन का ख़्वाहां न होगा तो कौन होगा? अपने देश वापस जाने पर हम अपने भाइयों को अपनी निजी जानकारी के बल पर बताएंगे कि चेयरमैन माओ शान्ति के बड़े से बड़े खम्बों में हैं. हम जानते हैं कि कोरिया के मामले में चीन ने तभी हाथ डाला जब उसकी अपनी सरहद ख़तरे में पड़ गई थी. लेकिन यह हाथ जो डाला सो महज़ अपने बचाव की ख़ातिर डाला. आप जानते होंगे कि हिन्द सरकार ने यूनो और अमरीका को होशियार कर दिया था कि ३८ वीं पड़ी लकीर के आगे न बढ़ना. महात्मा गांधी से हमें जो प्रेरना मिली है उसकी वजह से हिन्दुस्तान क़ौमों के बीच किसी भी तरह की लड़ाई के ख़िलाफ़ है. सोवियत रूस ने जो सुझाव इस सिलसिले में पेश किया है उसकी हम बहुत क़द्र करते हैं. रूस का सुझाव है कि दुनिया के सभी देश धीरे धीरे मगर एक साथ हथियार बन्दी शुरू कर दें. इस के अलावा रूस का यह भी कहना है कि सभी एटामिक हथियार एक साथ ख़त्म कर दिये जाएं. हमें इस बात का अफ़सोस है कि दूसरे बड़े मुल्कों को यह सुझाव मंज़ूर न हुए. हिन्दुस्तान दिल से उस दिन का इन्तज़ार कर रहा है जब सारे देश अपनी मरज़ी से हथियार छोड़ देंगे, मुल्क के कुल हथियारों को तोड़ कर हल-फावड़े की शकल दे दी जाएगी, जब इस धरती पर

रहने वाले एक हो जाएंगे और जब हर इनसान यह महसूस करेगा कि मैं एक खानदान का हिस्सा हूं और इसी तरह काम करेगा.

हिन्दुस्तान में जो शान्ति आन्दोलन चल रहा है उसका यही मक़सद है. दूसरे प्रोग्राम भी उसकी मातहती में पूरे किये जा रहे हैं—जैसे शान्ति अपील पर दसख़त, पंच ताक़त सुलहनामे पर इसरार, वग़ैरा. हमें यक़ीन है कि दिन दिन हिन्दुस्तान और चीन में सच्ची दोस्ती और भाई चारा बढ़ेगा. और यही वह चीज़ है जिसके बल पर दुनिया में सच्चे और मुस्तक़िल तौर पर शान्ति क़ायम हो सकती है.

पेकिंग रेडियो से ब्राडकास्ट

२२ सितम्बर की सुबह को जब हमारा जहाज़ हांगकांग से चल कर नए चीन की धरती के नज़दीक पहुँच रहा था तो हमने तोपें छूटने की आवाज़ सुनी, कैन्टन के बंदरगाह की सजावट को दूर से देखा और मिलेट्री बैन्ड की मनोहर अवाज़ हमारे कान में पड़ी. इससे हम समझ गए कि हमारे स्वागत की कैसी ज़बरदस्त तैयारियाँ हैं. उस वक़्त से लेकर अब तक—इस वक़्त तक—जो मुहब्बत, जो उदारता, जो मेहरबानी चीनी सरकार और चीनी भाई-बहनों ने हमारे ऊपर बरसाई है और जिस जोश और ख़ुशी के साथ हमारा स्वागत किया है, उससे हमारे हिन्द मिशन के हर मेम्बर का दिल फूला नहीं समाता. हम अपने देश वापस जा रहे हैं मगर यहाँ की मीठी याद हमारे दिल में हमेशा बनी रहेगी.

हमने नए चीन के--निजी और सरकारी--दोनों तरह के कारख़ाने देखे. यहाँ की यूनिवर्सिटियाँ देखीं. हमने यहां के मज़दूरों के, नौजवानों के, औरतों के और तरह तरह के संगठनों को अमली रूप में देखा. हमने यहाँ की सहयोगी सोसाइटियाँ देखीं, नाटक देखे, सिनेमा देखे. हम नए चीन के बाज़ारों में, गली-कूचों में और गावों में घूमे. हर जगह हमें महसूस हुआ कि नए लोकराज की सभी जमाअतों के लोगों के दिलों में कितना उत्साह और अपने नेता चेयरमैन माओ-त्से-तुंग के लिये कितना प्यार है. इन दो बरसों में नए चीन ने वह पेचीदा सवाल हल कर लिये जो बहुत से देशों के नेताओं और सरकारों को परेशान किये हुए हैं. चीन की सरकार ने इतने बड़े मुल्क में से भिकमंगी और इसमत फ़रोशी को बिलकुल ख़त्म कर दिया. इसने वह बेईमानी और रिश्वत ख़ोरी ख़त्म कर दी जिसके लिये चीन के हाकिम दो बरस पहले सारी दुनिया में बदनाम थे. कारख़ानों में हमने देखा कि मामूली मज़दूर और मैनेजर की तनख़ाहों में कोई बड़ा फ़र्क़ नहीं है. कैन्टन में जो बड़ी भारी पेपर मिल है वहाँ पर सब से कम और सबसे ज़ियादा तनख़ाहों में तीन व आठ की निस्बत थी. पेकिंग की एक फ़ैक्टरी में हमने देखा कि एक मज़दूर लड़की को जहाँ ढ़ाई सो केटी अनाज हर महीने मिलता था, डायरेक्टर को सिर्फ़ साढ़े तीन सौ. हमें यह जान कर ख़ुशी हुई कि नए चीन में छोटे से लेकर बड़े तक, ज़ियादातर सरकारी मुलाज़िमों

को तनख़ा रुपया या सिक्के के बजाए अनाज की शकल में मिलती है. इसी का नतीजा है कि एक कैबिनेट मिनिस्टर या यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर के कपड़ों में और मामूली क्लर्क या फ़ैक्टरी- मज़दूर के कपड़ों में क़रीब क़रीब कोई फ़र्क़ नहीं रहता. महज़ देखने से एक दूसरे में तमीज़ करना मुशकिल था. अगर मज़दूरों या किसानों की भीड़ में चेयरमैन माओ खड़े हों तो उन्हें कपड़ों के बल पर तो पहचाना भी नहीं जा सकता. हमने देखा कि नया चीन एक अमली लोकराज और सही मानों में लोकराज है.

चीनी लोकराज की सालगिरह के दिन हमने देखा कि लाखों-करोड़ों लोगों में अपने नए लोकराज और उसके चेयरमैन के लिये कितना उत्साह है. उस दिन हमने देखा फ़ौजें क़वायद कर रही हैं, गोला-तोप-सामान चल रहा है, हवाई जहाज़ दौड़ रहे हैं और लोगों के लम्बे चौड़े जलूस चुपचाप ताली बजाते हुए निकल रहे हैं. हमने देखा कि उन सबमें कितनी एकता है, कितनी हिम्मत है और उनके अन्दर क्या कमाल की जान है. हमें यक़ीन है कि नया चीन अजय है, इसे कोई नहीं जीत सकता. हमें यह समझाया गया और हमने एहतियात से समझा कि इन दो बरसों में नए चीन ने किस तरह अपनी पैदावार बढ़ा ली, दाम गिरा लिये, मंहगाई के सवाल को हल कर लिया, अपने आने-जाने के चकनाचूर साधनों को, जिन में रेलवे भी शामिल है, किस तरह फिर से बना लिया और उनमें तरक़्क़ी भी की, अपने अन्दर आने वाले और बाहर जाने वाले ब्योपार का सिलसिला ठीक बैठा लिया, और सबसे ख़ास बात जो की वह यह कि अपने यहाँ के बे ज़मीन वालों को ज़मीनें दीं. इन सबसे पता चलता है कि यहाँ के नेताओं में तामीर का कितना माद्दा है और लोगों में किस क़दर मुस्तक़िल मिज़ाजी है जिस पर किसी भी मुल्क को नाज़ हो सकता है. जो कुछ हमने देखा उससे हमारा पक्का यक़ीन हो गया है कि नए चीन में न तो दूसरों पर हमला करने की इच्छा है न हो सकती है. हमें यक़ीन है कि नया चीन शान्ति के लिये एक बहुत बड़ा सहारा है और सारी दुनिया के लोगों से मिल कर मेल-मुहब्बत के साथ रहना चाहता है.

हमें यह भी यक़ीन है कि नया चीन हिन्दुस्तान की दोस्ती की बहुत क़द्र करता है. मैं अपने चीनी भाइयों को इतमिनान दिलाता हूं कि हिन्दुस्तान के लोगों के दिल में भी चीन की नई सरकार के साथ वैसी ही दोस्ती और भाई चारे की भावना है. अपने महान नेता महात्मा गांधी की सीख के मुताबिक़, हिन्दुस्तान शान्ति का हामी है और हमें यक़ीन है कि चीन और हिन्दुस्तान की दोस्ती

विश्वशान्ति के लिये बड़ा भारी सहारा साबित होगी. मुझे उम्मीद है कि हमारे मिशन के आने से इस दोस्ती के बढ़ने में बहुत मदद मिलेगी. आपस में एक दूसरे के यहाँ ऐसे मिशनों की तादाद आगे चल कर बढ़ेगी. हमारी यूनिवर्सिटियाँ एक दूसरे के विद्यार्थियों को अपने यहाँ रखकर उनको कुछ तालीम देने का इन्तज़ाम कर सकती हैं. इसी तरह से तरह तरह के मिशन—साइन्सदानों के, आर्थिक शास्त्रियों के, कलाकारों के, औरतों के, लेखकों के, और मज़दूरों के भी—एक देश से दूसरे देश में आ जा सकते हैं.

मैं यह स्पीच इस उम्मीद के साथ ख़त्म करता हूँ---और यह उम्मीद बड़ी पक्की व सच्ची उम्मीद है—-कि हिन्दुस्तान और चीन में दोस्ती दिन दूने रात चौगुने बढ़ेगी, दोनों एक दूसरे के ज़ियादा नज़दीक आएंगे और तरह तरह से आपस का यह रिश्ता बढ़ेगा. मैं यह भी उम्मीद करता हूँ कि हिन्द-चीन के इस रिश्ते से दुनिया की क़ौमों के बीच एकता क़ायम होने में मदद मिलेगी, उनकी तरक़्क़ी होगी और वह फूले फलेंगे.

(१०.१०.१९५१)

दुनिया की शान्ति के अलमबरदार—
चीन और हिन्दुस्तान

चीन में हम जहाँ जहाँ गए हमारी इतनी खातिर हुई, इतने प्यार और मुहब्बत से यहाँ के लोग हमारे साथ पेश आए, हमारे हर आराम और आसाइश का इतना खयाल रखा गया, इतने जोश के साथ हमारी हर छोटी-बड़ी सच्ची-झूटी ज़रूरत को पूरा किया गया कि हम सब के सब इसी अनोखी आवभगत पर दंग रह गए हम हिन्दुस्तान वापस जा रहे हैं पर इन चीज़ों की प्यारी याद हमारे दिल में हमेशा बनी रहेगी.

चीन एक पुराना देश है जिस की सभ्यता का इतिहास कम से कम चार हज़ार बरस से मिलता है. यही हाल हमारे देश का है. चीन ने दुनिया को कई ऐसी नियामतें दी हैं जिनके बिना इनसानी सभ्यता का फलना फूलना नामुमकिन था, जैसे सर के लिये टोप, जांघिया या पायजामा, छपाई के टाइप, क़ुतबनुमा, आतिशबाज़ी और बारूद. इसी तरह हिन्दुस्तान ने जो दुनिया को बहुत सी चीज़ें दी हैं उनमें से खास हैं हिन्दसे—जो अरब में 'हिन्द-से' और योरप में अरबी हिन्दसे कहलाते हैं, और दशमल तरीक़ा जो सारे हिसाब किताब, ज्योतिश और अर्थशास्त्र की बुनियाद है. आज से दो हज़ार साल पहले इन दोनों महान और पुराने देशों में काफ़ी नज़दीकी रिश्ता था. इस रिश्ते पर ब्योपार, कलचर और धर्म की छाप थी. यह दोस्तानी रिश्ता था, भाई चारे का रिश्ता था जिससे दोनों देशों को फ़ायदा पहुंचता था और जो दोनों की शान को बढ़ाता था. समय बीतता गया, दोनों देशों में लेन-देन कम होता गया. यह रिश्ता भी उसी चाल से हलका पड़ता गया. बाद में जब पच्छिम के देश हम दोनों पर हावी हो गए और हमारी अपनी अपनी घरेलू आफ़तें बढ़ गईं तब इस रिश्ते का चिराग़ एकदम गुल हो गया. हिन्दुस्तान अंगरेज़ी साम्राज शाही के शिकंजे में फंस गया और चीन लगभग नौ योरपी ताक़तों के चक्कर में पड़ कर काफ़ी मुसीबतों का शिकार बना. हिन्दुस्तान में विदेशी राज सौ बरस से ऊपर रहा, क़रीब इतने ही अरसे चीन परेशान रहा.

खुश क़िसमिती से दोनों देशों ने करवट बदली. महात्मा गाँधी की अनमोल रहनुमाई में हिन्दुस्तान ने चार साल हुए आज़ादी हासिल की. चीन भी

बहादुरी के साथ विदेशी साम्राजशाहियों और घरेलू पिछ-घसीटू ताक़तों से लड़ता रहा—लड़ता रहा उस प्रेरना के उभार से जो उसे डाक्टर सन यात सेन से मिली और उस अनमोल रहनुमाई में जो चेयर मैन माओ-त्से-तुंग से उस को मिली. इसका नतीजा है कि आज से दो बरस पहले चीन ने सच्ची आज़ादी हासिल की. हम इस वक़्त चीन में जनता की इस लोकशाही की दूसरी सालगिरह को ही देखने आए थे. और हम आए थे चीन के लोगों को उनके इस महान कारनामे पर बधाई देने.

क़रीब एक महीना हम यहां रह चुके. हमें बेहद अचरज और खुशी यह देख कर हुई कि इतने छोटे से अरसे में चीन किस तरह इतनी तरक़्क़ी कर गया और उसने अपनी समाजी और आर्थिक ज़िन्दगी को—जो क़रीब क़रीब बरबाद हो चुकी थी—कैसे फिर से बना डाला. हमें तो यह जादू सा लगता है कि कैसे दो बरस के अन्दर चीन ने इतना कमाल कर डाला. उसने अपने उन उद्योग धंदों और कारखानों को फिर से खड़ा कर लिया जो चकनाचूर हो चुके थे, और बेहद बढ़ा लिया. उसने अपना सारा माली निज़ाम मानो फिर से रच डाला, उसने अपने यहां के हाकिमों और आम जनता की तरह तरह की बेईमानियों और बदचलनिओं को खत्म कर दिया. उसने इतने लम्बे चौड़े देश से भीक मांगने और वेश्यापन के पेशे को मिटा दिया, सारी जनता का नैतिक स्तर ऊंचा उठा दिया, सब बे ज़मीन वाले किसानों को ज़मीन दे कर अपनी खेती की पैदावार इस हद तक बढ़ा ली कि जहाँ तीन बरस पहले उसे दूसरे मुल्कों से लाखों टन अनाज की भीक मांगनी पड़ती थी आज वहां वह लाखों टन अनाज दूसरे देशों को भेज सकता है. उसने अपने कारखानों में पक्का माल इस तरह और इतनी तादाद में तैयार कर लिया कि आज वह अपनी रोज़ की ज़रूरत की हर चीज़ ख़ुद पैदा कर लेता है. नए चीन ने फ़र्क़ मिटा दिया मालिक और नौकर का, ग़रीब और अमीर का, आक़ा और ग़ुलाम का. उसने चीज़ों के भाव ठिकाने पर लगा दिये और मंहगाई के सवाल को—जहाँ क़ीमतें आसमान पर चढ़ती चली जाती थीं—ठीक ठीक हल कर दिया. उसने सारी जनता में एक ऐसी जान डाल दी कि वह जी-जान से काम में जुट गई और देश की खातिर हर क़ुरबानी करने को तैयार हो गई. अगर जनता में क़ुरबानी का यह जज़बा पैदा न हुआ होता तो इतना सब होना नामुमकिन था. इस सब की खास वजह है चेयर मैन माओ त्से-तुंग की अचूक और रचनात्मक रहनुमाई, और उनके बेलाग और सच्चे साथियों का जत्था. चीन का यह एक ऐसा कमाल है जिस पर बिना आँखों देखे यक़ीन

करना मुशकिल है. हम अपने देश वापस जा रहे हैं पर पिछले दो बरस के चीनी इतिहास के ज़बरदस्त कारनामे का जो असर हम पर पड़ा है उसे कभी नहीं भूल सकते.

हमें यह भी यक़ीन है कि चीन और उसके नेता दुनिया की हर क़ौम के साथ अमन से रहना चाहते हैं. जहां जहां हम गए, जिन सभाओं में हम बैठे, जिन बाज़ारों में हम घूमे, जो गांव शहर हमने देखे, कहीं भी हमें कोई भी ऐसा न मिला जिसे लड़ाई की धुन हो. वहां लड़ाई की कोई सोचता भी नहीं. चीन में लड़ाई के शौक़ीन या खून के प्यासे लोगों का पता भी नहीं है. यहां का जो आर्थिक संगठन है वह लड़ाई को निशाना बना कर नहीं खड़ा किया जा रहा है, बल्कि रोज़ के बरतने की चीज़ों को तैयार करने के लिये खड़ा किया गया है. जो देश रचनात्मक कामों में इतनी अच्छी तरह लगा हो उसे कहां इतनी फुरसत कि लड़ाई की बात करे या इस तरह का कोई प्रापेगेन्डा रचे. मुकदन तक के नगर में, जो कोरिया की सरहद के पास है, हमने देखा कि सब लोग अपने मामूली कारबार में लगे हुए थे. यही हालत हमने कैन्टन में देखी. हमें मालूम होता है कि चेयरमैन माओ केवल एक बहादुर जनरल ही नहीं हैं बल्कि ऊंचे पाए के रचनात्मक लीडर भी हैं. हमें यक़ीन है कि चीन और उसके नेता सच्चे दिल से अमन शान्ति चाहते हैं.

इसी तरह से हिन्दुस्तान भी—जिसे महात्मा गांधी से प्रेरना मिली है—अमन शान्ति से रहना चाहता है और दुनिया की हर क़ौम के साथ भाई चारे का सम्बन्ध रखना चाहता है. हिन्दुस्तान की सरकार ने अपने बड़े वज़ीर पंडित जवाहर लाल नेहरू की रहनुमाई में राष्ट्रों के बीच अमन शान्ति बढ़ाने के लिये जो कुछ किया जा सकता था किया है. जापानी सुलहनामे जैसी निकम्मी चीज़ को हिन्द सरकार ने हाथ भी नहीं लगाया. यूनो में चीन को इज़्ज़तदार जगह मिले, इसके लिये हिन्दुस्तान ने जो हो सका वह किया और कर रहा है. वह कर रहा है इस वजह से क्योंकि हिन्दुस्तान मानता है कि यूनो सब राष्ट्रों का संगठन तब तक नहीं कहला सकती जब तक उसमें चीन पूरी तरह शरीक न हो.

सोशलिज़्म या कम्यूनिज़्म की इल्मी बहस में मैं इस वक़्त नहीं जाऊंगा. लेकिन मुझे यक़ीन है कि शायद ही दुनिया में कोई ऐसा विचारक होगा जो ज़रा आगे की सोचता हो और यह न मानता हो कि दुनिया की आर्थिक बेहतरी तभी हो सकती है जब यहां किसी न किसी तरह का सोशलिस्ट या कम्यूनिस्ट निज़ाम क़ायम हो. इस बारे में जो मत भेद हैं वह आखिरी मंज़िल के बारे में उतने

नहीं हैं जितने इस बात की बाबत कि इस मंज़िल तक पहुंचने के लिये जुदा जुदा देशों में इसकी शकल क्या हो और कौन कौन तरीक़े इस्तेमाल किये जाएं. चीन कम्यूनिस्ट कहा जाता है और चीनी लोग इस बात से इन्कार नहीं करते. लेकिन हमने देखा कि चीन में हर कारख़ाना, ज़मीन का हर टुकड़ा और हर रोज़गार या तो किसी की निजी मिलकियत है या सरकारी मिलकियत है. निजी मिलकियत का हक़ चीन में माना जाता है और उसकी क़द्र की जाती है. निजी कारख़ाने चलाने के लिये भी लोगों का हौसला बढ़ाया जाता है. हां, इस सबके ऊपर सरकार की निगरानी ज़रूर रहती है. जनता की सरकार यहां तक करती है कि निजी कारख़ाने वालों को कच्चा माल दिलाती है, इनके तैयार माल की बिक्री का ज़िम्मा लेती है और उनके मालिकों को मुनासिब (२० फ़ीसदी तक) मुनाफ़ा भी खाने देती है. यही नहीं, विदेशी पूंजी, विदेशी कारख़ानों और विदेशी कम्पनियों को भी बढ़ने फैलने का काफ़ी मौक़ा नए चीन में दिया जाता है.

चीन की सरकार ग़ैर पारटी और सब पारटियों की मिली हुई सरकार है. चीन के नेता सोचते हैं कि अगर कम्यूनिस्ट आदर्श पर वह कभी पहुंचे भी तो कम से कम तीस साल उन्हें लग जाएंगे. अपने देश के माली बन्दोबस्त को वह कम्यूनिस्ट न कह कर 'नया लोकराज' (New Democracy) कहते हैं. अगर चीन कम्यूनिस्ट है तो उसका कम्यूनिज़्म चीनी कम्यूनिज़्म है जो उसकी ज़हनियत के मुताबिक़ है और उसके पुराने आदर्शों से मेल खाता है.

ज़ाहिर है कि चीन के नज़रिये और तर्ज़ में रूस के नज़रिये और तर्ज़ से फ़र्क़ है. तिस पर भी रूसी लोग और रूसी सरकार चीन की मदद कर रहे हैं. इससे पता चलता है कि रूस वालों का दिल कितना बड़ा है और दिमाग़ कितना वसी है. चीन की इस नई तामीर में रूस हर तरह की मदद, तकनीकी हो चाहे कैसी, पहुँचा रहा है. इसके अलावा मार्शल स्टालिन ने कई बार यह सुझाव रखा है कि दुनिया के सभी देश धीरे धीरे और एक साथ हथियार कम करना शुरू कर दें. यही नहीं, रूस ने अब तक लड़ाई में हाथ नहीं डाला है हांलाकि उसके पड़ोस में ही लड़ाई के गोले गरज रहे हैं. रूस के इस अलग रहने से बहुतों को हैरत भी हुई है.

हम इस सब से इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि कम्यूनिस्ट रूस और उसके नेता भी शान्ति चाहते हैं और दूसरे देशों से मिल कर अमन के साथ रहना चाहते हैं. चीन में मेरी मुलाक़ात कई असरदार और इज़्ज़त वाले रूसी विद्वानों से हुई. उन्हें यक़ीन है कि उनका आदर्श शान्ति के वातावरन में ही फल फूल सकता है और

लड़ाई से उनके पल्ले कुछ भी नहीं पड़ने वाला है. मुझे इस में ज़रा भी शक नहीं है कि रूस अमन का पुजारी है.

इन सब बातों के आधार पर मैं कह सकता हूँ कि रूस—मार्शल स्टालिन की रहनुमाई में, चीन—चेयरमैन माओ की रहनुमाई में और हिन्दुस्तान—पंडित नेहरू की रहनुमाई में—तीनों दुनिया की शान्ति की हिफ़ाज़त के लिये साथ साथ खड़े हो सकते हैं. लाज़िमी बात है कि तीनो देशों का विकास अपने अपने ढंग और तरीक़े से ही होगा. लेकिन शान्ति के लिये तीनों बेचैन हैं. और सच यह है कि हम एशिया के देशों का एक हो जाना और एक ठोस ताक़त बन जाना देखना चाहते हैं, इस वजह से नहीं कि एशिया या एशया के किसी देश की यह इच्छा है कि किसी दूसरे इलाक़े या देश पर अपना राज क़ायम कर ले, बल्कि इस वजह से क एशिया के देशों ने पच्छिमी त क़तों की सम्राजशाही लालसाओं का शिकार बन कर काफ़ी चोटें खाई हैं और कुछ देश तो आज भी खा रहे हैं. 'एशिया एक हो' की आवाज़ सामने के ख़तरे से बचने के लिये सिर्फ़ बचाव की ख़ातिर है. एशियाई एकता के इस ख़याल से न इंगलैन्ड को डरने की ज़रूरत है, न अमरीका को औ न पच्छिम के किसी और देश को.

महात्मा गांधी की सीख के मुताबिक़ हिन्दुस्तान लड़ाई से नफ़रत करता है. हमारे बड़े वज़ीर नेहरू ने हाल ही में कहा है कि "लड़ाइयों से कोई सवाल हल नहीं हुआ करते." हिन्दुस्तान यह चाहता है कि इंगलैन्ड हो चाहे अमरीका या कोई और देश हो, पच्छिम का हो या पूरब का, वह सब के साथ इन्तहाई दोस्ती के ताल्लुक़ रखे. मुझे यक़ीन है कि यही इच्छा चीन की है और यही रूस की भी. हमारा आख़िरी मक़सद 'एक नई दुनिया' बनाना है, ऐसी दुनिया जिसमें लड़ाई की कोई गुंजायश न हो, जिसमें सब मुल्कों के लोग अपना भला बुरा एक सा देखते हों, जिसमें कोई किसी को चूस न सके, जिसमें किसी देश का दूसरे पर राज न हो और जिसमें सब, सब की भलाई के लिये काम करते हों.

हिन्दुस्तान और चीन इस मक़सद के हासिल करने के लिये एक दूसरे के हर तरह साथ हैं. हमे उम्मीद है कि दूसरे सभी देश और राष्ट्र इस नेक काम में हमारा पूरी तरह हाथ बटायें.

(अंगरेज़ी अख़बार 'शंघाई न्यूज़' से)

चीन को अलविदा

मेरे प्यारे चीनी भाइयो और बहनो !

चालीस दिन हुए हम आपके इस कैन्टन शहर में हिन्दुस्तान से आए थे. उस वक़्त जिस मुहब्बत और उदारता के साथ अपने हमारा स्वागत किया था और जो प्यार भरी ख़ातिर तवाज़े आपने हमारी की उससे हमारे दिमाग़ों पर बहुत काफ़ी असर पड़ा था. इसके बाद हम पेकिंग पहुँचे और फिर चीन के दूसरे शहर देखे. मेरा ख़याल है आप यह उम्मीद करते होंगे कि इस अरसे में हमने जो देखा और उसका जो असर हम पर हुआ उसकी कुछ झलक आप को दें. मैं यह काम बहुत ख़ुशी से करता हूं.

सच बात यह है कि जब आपने हमें बुलाया तो हम दोस्त और हमदर्द बनकर आए. लेकिन हमारे दिमाग़ में कोई लगाव-चिपकाव नहीं था. हमने हिन्दुस्तान में आपके देश की बाबत बहुत कुछ सुना था, यहां की बाबत बहुत कुछ पढ़ा था. आप के लिये हमारे दिल में काफ़ी इज़्ज़त और प्यार था. फिर भी, हमें बड़ी ख़ुशी इस बात से हुई कि आप के साक्षात दर्शन करने का मौक़ा हमें मिलेगा. और यह मौक़ा हमें मिला. इसके लिये हम आपके बहुत एहसान मन्द हैं.

अब मैं इस चीज़ पर आऊं कि हम पर क्या असर पड़ा. बहुत थोड़े से मैं आपको मैं बताऊं कि हमारे इस दौरे से हमारा आपका दो हज़ार बरस का पुराना रिश्ता फिर से हरा हो गया है. हिन्दुस्तान और चीन में जो दोस्ती थी वह पहले के मुक़ाबले कहीं ज़ियादा गहरी और नज़दीक हो गई है. मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि अब यह दोस्ती पक्की और टिकने वाली बन गई है. मैं अपनी तरफ़ से, अपने मिशन की तरफ़ से और हिन्दुस्तान के लोगों की तरफ़ से आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि हमारे इस दौरे के बाद दुनिया में कोई चीज़ ऐसी नहीं है है जो हमारे आपके प्यारे और दोस्ताना ताल्लुक़ात में कोई ख़लल डाल सके. सदर साहब ! चीन की जनता ने पिछले दो बरस में जो कमाल हासिल किये हैं वह हमने देखे. हमने देखा कि अपने मज़दूरों, अपने किसानों, अपनी औरतों और अपनी आम जनता के लिये आप कितना कुछ इस अरसे में कर सके हैं. हमने देखा कि समाजी, आर्थिक और दस्तकारी—कारख़ाने के मामलों में आपने कितनी हैरतनाक तरक़्क़ी है. इस सबका हम पर गहरा असर पड़ा है. मैं अपने

को इतिहास का विद्यार्थी मानता हूं और मुझे यक़ीन है कि दुनिया के शायद ही किसी मुल्क ने सिर्फ़ दो बरस की मुद्दत में इतनी तरक़्क़ी की होगी जितनी चीन ने की है.

अपनी तरफ़ से, अपने मिशन की तरफ़ से और हिन्दुस्तान की जनता की तरफ़ से मैं चीनी जनता के आगे सिर झुकाता हूं, जिसने कमाल के कारनामे दिखाए हैं. आपके महान नेता चेयरमैन माओ-त्से-तुंग के आगे सिर झुकाता हूँ. जब ज़रा ख़मोशी के साथ मैं यह सोचता हूँ कि आपके देश में इस बार घूम कर हमने क्या क्या सीखा तो मैं इस नतीजे पर पहुँचता हूं कि चेयरमैन माओ सिर्फ़ चीन के ही नेता नहीं हैं बल्कि एक तरह से देखा जाए तो एशिया के लीडर हैं, जिसमें हिन्दुस्तान भी शामिल है. जैसा मैंने अभी अर्ज़ किया, यहाँ पर हमने जो कुछ देखा, उससे हमने अपने देश की तरक़्क़ी और बेहतरी के लिये काफ़ी सबक़ लिया है. हमने आपके कारख़ाने देखे, यूनिवर्सिटियाँ देखीं, गाँव देखे, बाज़ार देखे, संगठन सभाएं देखीं. हमने आप के यहाँ की अदालतें कचहरियां देखीं. इन सबसे हम इसी नतीजे पर पहुंचे कि हमारे देश हिन्दुस्तान को चीन से बहुत कुछ सीखना है.

जहाँ तक राजनीति का सवाल है उस दायरे में भी चीन ने पिछले चन्द बरसों में जो फ़तह हासिल की है वह कोई छोटी चीज़ नहीं है. मेरा ख़याल है कि पच्छिम के साम्राज वादियों को यह सबक़ अच्छी तरह मिल गया होगा कि चीन अजेय है, इसे कोई नहीं जीत सकता. सदर साहब! आपने अपनी स्पीच में कहा कि चीन अब दबी हुई क़ौम नहीं रह गई है. लेकिन हमारी राय कुछ और है. दबी हुई क़ौम होने न होने का कोई सवाल ही नहीं है. आज चीन दुनिया की बड़ी से बड़ी और ऊंची से ऊंची ताक़तों में से है. और चीन की बात छोड़िये, जब हम एशिया का ज़िकर करते हैं तो मै पूछता हूं क्या कोरिया के चन्द लाख आदमियों ने ही पच्छिम को एक ज़बरदस्त सबक़ नहीं सिखा दिया है? यह वह सबक़ नहीं है जिसे कोई सहज में भूल जाए. कोरिया ने अपनी हिम्मत दिखाई है चीन ने अपनी ताक़त दिखाई है. अंगरेज़ी साम्राज वाद के शिकंजे को तोड़ कर हिन्दुस्तान आज़ाद हुआ है. एशिया की दूसरी क़ौमें भी या तो आज़ाद हो गई हैं या आज़ाद होने जा रही हैं.

यहाँ पर इस जलसे में जिन चार पाँच देशों के नुमाइन्दे मौजूद हैं उन देशों की कुल आबादी सौ करोड़ के क़रीब होती है. यह आबादी दुनिया की आबादी

का ठीक आधा हिस्सा है. और मैं आपको इतमिनान दिलाता हूं कि अगर दुनिया की यह आधी आबादी एक साथ क़दम उठाती है तो कोई ताक़त ऐसी नहीं है जो इसके आगे ठहर सके. एशिया ने इरादा कर लिया है कि वह आज़ाद होगा और फिर से बड़ी चीज़ होगा. साम्राजशाही, पूँजीशाही और जागीरशाही का ज़माना लद गया, हमेशा के लिये लद गया. जब तक यह चीज़ें रहती हैं तब तक दुनिया में असली शान्ति क़ायम ही नहीं हो सकती. और मैं आपसे कहता हूँ कि एशिया के देशों ने इन शाहियों को ख़त्म करने का फ़ैसला कर लिया है. इसलिये मैं आपको फिर से यक़ीन दिलाता हूँ कि साम्राजशाही, पूंजीशाही और जागीरशाही के ख़िलाफ़ आप जो लड़ाई लड़ रहे हैं उसमें हिन्दुस्तान आपके कंधे से कंधा मिलाकर साथ देगा.

एशिया की एकता इस ख़ातिर नहीं है, उसका यह मतलब नहीं है, कि किसी दूसरे देश पर हमला-चढ़ाई की जाए. इसमें कोई शक नहीं कि योरप या अमरीका के किसी देश पर हमें धावा नहीं करना है. हमारी ताक़त एक ज़बरदस्त और दर्दनाक ज़रूरत का नतीजा है. सौ बरस से ऊपर हुआ हम पच्छिमी साम्राजशाही का शिकार बने और मुसीबतें उठाईं. हममें से कुछ तो आज भी, अभी भी, उठा रहे हैं. यही वह ख़तरा है, यही वह बदक़िस्मती है जिस ने हम सब को एक कर दिया, काफ़ी बड़े पैमाने तक हम इस चंगुल से निकल आए हैं और जो कुछ बाक़ी बचा है उससे भी जल्द निकल आएंगे.

इसलिये योरप या अमरीका या और कहीं किसी भी देश को एशिया की एकता से ख़ौफ़ खाने की ज़रूरत नहीं है। हमारी एकता का मक़सद है—दुनिया में शान्ति क़ायम करना. हमारी एकता का मक़सद है दुनिया के सब रहने वाले एक हो जाएं.

इसलिये, सदर साहब ! मैं आपको फिर से यक़ीन दिलाता हूं कि इस शान्ति और एकता के क़ायम करने की आपकी कोशिश में हिन्दुस्तान आपके साथ है. इसके पहले कि मैं ख़त्म करूँ, एक चीज़ और कहना चाहता हूं, लेकिन वह ख़ासगी या निजी बात है. मैं उसके लिये आपकी माफ़ी चाहता हूं. वह यह है कि इन पांच हफ़्तों में हम जो चीन में रहे तो जिन चीनी भाई बहिनों से मुझे वास्ता पड़ा उनसे मुझे अपने कुटुम्ब जैसी मुहब्बत पैदा हो गई है. मैं अपनी ही नहीं बल्कि अपने मिशन के हर भाई बहन के दिल की भावना ज़ाहिर करता हूं, जब मैं यह कहता हूँ कि अपने इस सफ़र में जिन लोगों से हमें वास्ता पड़ा है इनमें से कुछ को तो हम कभी नहीं भूल सकेंगे.

आपने जिस प्यार से हमें यहां पर रखा वह हम कभी नहीं भूल सकते. यक़ीन मानिये कि यहाँ से जाने में हमें तकलीफ़ ही हो रही है. मुझे ऐसा लगता है मानो हमें फिर अपने उस भाई से जुदा होना पड़ रहा है जिससे बरसों के बाद मुलाक़ात हो पाई थी.

सदर साहब ! हम —चीन और हिन्दुस्तान—केवल दो देश ही नहीं हैं जिनमें एकता है, बल्कि हम एक ही ख़ानदान के भाई बहिन हैं. मुझे यक़ीन है कि हमारा रिश्ता सिर्फ़ राज काजी रिश्ते के मुक़ाबले कहीं ज़ियादा गहरा और सच्चा है. जिन नौजवान लड़के लड़कियों से मैं यहाँ मिला उन्हें मैं अपने बेटे और बेटी मानने लग गया हूँ. मैं उन प्यारे बेटों और बेटियों के मुस्कराते चेहरों को कभी नहीं भूल सकता जो हर स्टेशन पर हमें फूलों की मालाएं दिया करते थे. कैसी अनोखी मुहब्बत ! कैसा अनोखा प्यार ! इसके अलावा बड़ी उमर के जो लोग हमारे पास आए और जिन से हमारा ज़ियादा नज़दीक का ताल्लुक़ रहा, वह भी हमारे साथ ऐसे ही ब्योहार करते थे जैसे सगे भाई बहनों के साथ किया जाता है. इन मीठी और लुभावनी यादों को लेकर हम हिन्दुस्तान वापस जा रहे हैं. यह याद हमेशा ही हमारे दिल में बनी रहेगी.

हमारी पुरानी किताबों में लिखा है कि सारा इनसानी समाज एक कुटुम्ब है. मैं मानता हूँ कि इस धरती पर रहने वाले दो सौ करोड़ प्रानी सच मुच एक कुटुम्ब हैं. मै मानता हूं वह दिन जल्द आने वाला है जब हम सब एक कुटुम्ब की तरह रहना शुरू कर देंगे. अगर इस में कोई अड़चन है तो उसे दूर कर वह दिन नज़दीक लाने की कोशिश करेंगे. यही असली मतलब है एशिया की एकता का, यही असली मतलब है हिन्दुस्तान और चीन की एकता का.

कैन्टन. 29. 10. '51

हिन्द और चीन का कलचरी मेल

पुरानी दुनिया की लगभग सब बड़ी बड़ी सभ्यताएँ बड़े बड़े दरियाओं के किनारे जनमीं और फूली फलीं. नील नदी के किनारे की मिस्री सभ्यता, दजला और फ़रात की सुमेरी सभ्यता, सिन्ध नदी की पुरानी भारती सभ्यता, गंगा और जमना की आर्य सभ्यता और युआंग-त्सी नदी के किनारे की पुरानी चीनी सभ्यता, सब इसी की मिसालें हैं. ये सब कहानी पिछले लगभग दस हज़ार बरस की इनसानी तहज़ीब की कहानी है. आज हम इन पुराने देशों में से दो यानी चीन और भारत की बाबत कुछ कहना चाहते हैं.

ये दोनों देश आज से कम से कम ५००० साल पहले मानव सभ्यता की चोटी पर पहुँच चुके थे, जब कि इंगलैन्ड का टापू योरप महाद्वीप की भूमि से अभी कट कर अलग भी नहीं हुआ था, और योरप के पूरबी, दक्खिनी और पच्छिमी किनारों पर केवल कहीं कहीं जंगली या नीम जंगली आदमी देखने को मिलते थे. बाक़ी सारा योरप उन दिनों लम्बी दलदलों, घने जंगलों और जंगली जानवरों से भरा हुआ था. अमरीका के आबाद होने में अभी हज़ारों बरस की देर थी.

चीन ने इनसानी दुनिया को बहुत सी चीज़ें सिखलाईं. छज्जेदार टोप जिसे अंगरेज़ी में 'हैट' कहते हैं चीन ही की ईजाद है. पायजामा यानी बेसिली धोती या लुंगी की जगह दोनों टांगों के लिये अलग अलग सिली हुई पोशाक भी दुनिया को चीन ही की देन है. तेरहवीं सदी तक सारे योरप में छोटी गोल टोपी जो केवल चान्द ढक सकती थी पहनी जाती थी और टांगों में तह बन्द या लुँगी बांधी जाती थी. पुराने यूनान और रोम की तस्वीरों और किताबों में यही पोशाक मिलेगी. तेरहवीं सदी में मार्को पोलो के चीन से योरप लौटने के बाद चीन से सीख कर योरप में टोप और पतलून का रिवाज शुरू हुआ. कागज़ की ईजाद दो देशों में अलग अलग हुई, मिस्र में "पैपिर" के दरख़्त से जिससे अंगरेज़ी का "पेपर" शब्द बना और चीन में बाँस से. कम्पास यानी क़ुतुबनुमा जो समन्दरी जहाज़ों को दिशा बताती है दुनिया को चीन ही की देन है. आतिश-बाज़ी और बारूद चीन ही की ईजादें हैं. रेशम का कातना और बुनना चीन ही ने दुनिया को सिखलाया.

चित्रकारी में चीन किसी समय दुनिया के सब देशों में बढ़ा चढ़ा था. भारत भी एक उतना ही पुराना देश है. जो जो चीज़ें दुनिया ने भारत से सीखीं उनमें शायद सब से दूर तक असर रखने वाले हिसाब के वह अंक या हिन्दसे हैं जो अरबों ने हिन्दुस्तान से सीख कर सारे योरप में फैलाए. सातवीं. सदी ईसवी तक योरप का सारा हिसाब किताब उन निशानियों की मदद से होता था जिन्हें आज कल हम रोमन निशानियाँ कहते हैं, जिनमें अधिक तर हमारी घड़ियों के एक दो तीन लिखे होते हैं. सातवीं सदी में अरबों ने जा कर जब योरप वालों को एक दो तीन अंक लिखना सिखाया तो कुछ ईसाई पादरियों ने पोप से शिकायत की कि—"विधर्मी अरबों ने कोई शैतान सिद्ध कर रखा है जिससे जो हिसाब हम लोग चार घंटे में लगा पाते हैं उसे यह चार मिनट में लगा लेते हैं." इसी बिना पर पोप से प्रार्थना की गई कि इन विधर्मी जादूगर अरबों को योरप से निकाल दिया जावे ! आज तक हिन्दुस्तान का एहसान मानते हुए अरब इन अंकों को 'हिन्दसा' कहते हैं, और अरबों के एहसान को याद रखते हुए योरप वाले इन्हें "एरेबिक न्यूमरल" कहते हैं.

चीन और हिन्दुस्तान के बीच मेल मिलाप का इतिहास भी कम से कम दो हज़ार बरस का इतिहास है. उन दिनों भारत से चीन आने जाने के तीन रास्ते थे—एक कशमीर और बीच एशिया से हो कर, दूसरा तिब्बत से हो कर और तीसरा समन्दर का रास्ता. हिन्दुस्तान और चीन दोनों सभ्य थे. दोनों में खाने कपड़े चांदी सोने और जवाहरात की रेल पेल थी. पर दोनों में से किसी ने अपनी अधिक से अधिक ताक़त और तरक़्क़ी के ज़माने में भी किसी दूसरे देश में जा कर अपना राज क़ायम करने या किसी देश से बेजा फ़ायदा उठाने की नहीं सोची. उस ज़माने में इन दो क़ौमों के मिलने और आज कल की सभ्य क़ौमों के मिलने में ज़मीन आसमान का फ़रक़ है. हमारा दोनों का मिलना दो नेक पड़ोसियों का मिलना था. यह मिलना प्रेम, नेकी और धर्म का मिलना था.

सबसे पहले और सबसे अधिक यह नाता धर्म ही के मैदान में चमका. सैकड़ों बौद्ध उपदेशक रास्ते की मुसीबतों का मुक़ाबला करते हुए बौद्ध धर्म का संदेश लेकर चीन पहुंचे और सैकड़ों ही चीनी यात्री और चीनी बौद्ध भिक्षु बौद्ध धर्म की तालीम हासिल करने के लिये भारत आए. सैकड़ों किताबों का संस्कृत और पाली से चीनी में और कभी कभी फिर चीनी से भारत की भाषाओं में अनुवाद हुआ. चीन के सम्राटों और वहाँ के विद्वानों ने भारत से जाने वालों का और भारत के महाराजाओं और विद्वानों ने चीन से आने वालों का दिल खोल

कर स्वागत किया. बौद्ध धर्म ने चीन पहुँच कर वहाँ के पुराने धर्मों, ताओ मत और कंग-फूत्से मत से टक्कर नहीं ली, उनका खंडन नहीं किया, बल्कि उनके साथ मिल कर एक व्यापक और उदार धार्मिक विचार धारा को जनम दिया, नेकी और सदाचार को ही धर्म का असल उसूल बताया और उसके ज़रिये सारे चीन के विचारों और जीवन को ऊंचा उठाया. बौद्ध धर्म के चीन पहुंचने के बाद इन तीनों धर्मों से रूढ़ियां और रीत रिवाज के छिलके कुछ हलके पड़कर वह नया गुलदस्ता तैयार हुआ जिसने एक बड़े दरजे तक चीनियों के धर्म को मानव धर्म, मज़हबे इनसानियत और सर्व धर्म समभाव का रूप दिया.

भारत के उस समय के बौद्ध विचारों पर भी चीनी विचारों का ख़ास असर पड़ा. उन दिनों की कुछ बौद्ध किताबों और उनके उसूलों पर चीनी ताओ धर्म और उसके उसूलों की काफ़ी छाप दिखाई देती है. दोनो देशों की कलाओं और कारीगरी जैसे मकान बनाने की कला, चित्रकारी, मूर्ति कला वग़ैरा पर भी एक दूसरे का असर पड़ा जो अभी तक क़ायम है. दोनों में आना जाना इतना बढ़ा कि उस ज़माने का भारत का इतिहास ज़ियादा तर उन बयानों के आधार पर लिखा जाता है जो ह्वेन सांग और फ़ाहियान जैसे विद्वान चीनी यात्री इस देश में अपने देखे सुने को लिख कर छोड़ गए हैं. सदियों तक हमें सुन्दर से सुन्दर चीनी बरतन और बढ़िया से बढ़िया रेशम के थान चीन ही से मिलते रहे. दसवीं सदी ईसवी में कागज़ बनना हमने चीन ही से सीखा. हमारे देश की कागज़ की क़न्दीलें, गुब्बारे, बड़े बड़े रंगीन पतंग, आतिशबाज़ी, चाय, सन्तरा, लीची और सफ़ेद शक्कर अभी तक उसी प्यारे मेल की यादगार हैं.

बारहवीं सदी के क़रीब भारत वासियों ने बाहर आना जाना बन्द कर दिया. बौद्ध धर्म देश से निकाला जा चुका था. ब्राह्मन धर्म और जात पात का फिर से ज़ोर हुआ. समन्दरी यात्रा पाप ठहराई गई. भारत वासी फिर एक बार कुएं के मेंढक हो कर रह गए. मुग़ल ज़माने में चीन से यह आना जाना फिर कुछ चमका. जहाँगीर के ज़माने में जब एक चीनी यात्री पटना की सराय में अपनी गठरी भूल गया तो दिल्ली सम्राट ने बड़ी एहतियात के साथ उस गठरी को पटना से मंगा कर अपने ख़ास आदमियों के हाथ चीन के सम्राट के पास भेजा इसलिये कि वह गठरी उसके मालिक को पहुंचा दी जाए. इसके बाद दुनिया की हवा पलटी. भारत और चीन दोनों देशों पर योरप की राज शक्तियों का सिक्का जमने लगा. हमारा वह दो हज़ार बरस का सम्बन्ध फिर टूट गया. एक सौ बरस तक चीन और भारत दोनों अपने अपने घरों को संभालने में लगे रहे.

दोनों ने योरपी क़ौमों के असर से अपने को आज़ाद करने की कोशिश शुरू की. फिर एक बार चीन और भारत में मेल मिलाप के दिन आए सन १६२४ में भारत के महाकवि डाक्टर रवीन्द्र नाथ टैगोर ने चीन की यात्रा की. चीन में जगह जगह उनका बहुत बड़ा स्वागत हुआ. पुराने रिश्ते जुड़े. शान्ति निकेतन विश्व-विद्यालय में 'चीनी' भवन' की की बुनियाद रक्खी गई. होते होते सन १६४७ में भारत अंगरेज़ों के पंजे से आज़ाद हुआ. सन १६४६ में चीन के अन्दर नया आज़ाद लोक राज क़ायम हुआ. दोनों देशों के विचार वान देश भक्त एक दूसरे से मिलने और एक दूसरे को अधिक समझने के लिये बेचैन हुए. पहली अक्तूबर सन १६५१ को नए चीनी लोकराज की दूसरी सालगिरह थी. भारत का एक प्रतिनिधि मंडल 'इन्डियन गुडविल मिशन' के नाम से उस जशन में हिस्सा लेने के लिये चीन पहुँचा. चीन की सरकार और वहां की जनता ने भारत के प्रतिनिधियों का जिनमें हिन्दू मुसलमान ईसाई पारसी, सब सूबों और सब विचारों के लोग शामिल थे, ज़ोरों के साथ खुले दिल से स्वागत किया. चालीस दिन चीन में रह कर भारत के प्रतिनिधियों ने नए चीन के रहन सहन, रंग ढंग और राज काज को अच्छी तरह से देखा.

हमने देखा कि इस नए कलेवर में भी पुरानी चीनी सभ्यता की बुनियादें डिगी नहीं हैं बल्कि उन्हीं पुरानी बुनियादों पर बीच की कमज़ोर इमारत को गिरा कर एक नया सुन्दर मज़बूत और विशाल भवन खड़ा कर दिया गया है.

सब से पहले मज़हब के मामले में नया चीन पहले से भी ज़ियादा ऊंचा और उदार है. नए चीन में हर आदमी को पूरी मज़हबी आज़ादी है. वहां बौद्ध है, कंगफूत्से धर्म के लोग हैं, ताओ धर्म के पैरो हैं, ईसाई हैं, मुसलमान हैं और भारत से गए हुए कुछ सिक्ख भी हैं. नए चीन में मसजिदें हैं जिनमें अज़ान दी जाती है और नमाज़ें पढ़ी जाती हैं, गुरुद्वारे हैं जिनमें ग्रन्थ साहब का पाठ होता है, बड़े बड़े मंदिर और पैगोडा हैं जिनमें धूप दीप के साथ पूजा होती है.

हाँग-चाऊ का सुन्दर नगर किसी समय बौद्ध धर्म और बौद्ध साहित्य का बहुत बड़ा केन्द्र रह चुका है. महाकवि रवीन्द्र नाथ टैगोर की वहाँ ख़ास आव भगत हुई थी. हमने वहाँ बौद्ध मन्दिर देखे जिनमें दस दस और बीस बीस फुट ऊंची बुद्ध बोधिसत्वों और दिग्पालों की सोने का पत्तर चढ़ी सुन्दर मूर्तियाँ इस समय तक भारत की उस पुरानी मूर्ति कला की याद दिला रही हैं. मन्दिर के घंटे घड़ियाल और धूप दीप हमारे दिलों पर ज़ोरों के साथ यह अंकित कर रहे थे कि अपने

बड़प्पन में, अपनी शान में और अपनी कमज़ोरी में तीनों में भारत और चीन एक थे, एक हैं और एक ही रहेंगे. उस मन्दिर के बाहर, जिसके चीनी नाम का हिन्दी अनुवाद है 'चारों दिशाओं का धार्मिक संगम', खिलौनों और पूजा के सामान की दर्जनों दुकानें हमें भारत के कुम्भ मेले की याद दिला रही थीं. मालूम होता था कि अब भी भारत की आम जनता और चीन की आम जनता में इतना फ़रक़ नहीं है. पर एक फ़रक़ हमें दिखाई दिया. इस मन्दिर से सम्बन्ध रखने वाले पुराने मठ और पुस्तकालय में चालीस चीनी बौद्ध महन्त रहते हैं. जब से नया चीनी लोकराज क़ायम हुआ है उनमें से तेरह जो अधिक बूढ़े हैं पूजा पाठ और पठन पाठन में लगे रहते हैं और बाक़ी सत्ताइस जो कुछ मज़बूत हैं दिन का अधिक तर समय किसानों की तरह खेती करने और अनाज पैदा करने में बिताते हैं. सरकार के या किसी के हुकुम या दबाव से नहीं बल्कि केवल देश के नए इन्क़लाब और नए विचारों के असर से.

चीन में अलग अलग धर्मों के लोगों को आपस में शादियां करने की पूरी आज़ादी है. केवल शर्त यह है कि एक पुरुष के एक से अधिक स्त्री या एक स्त्री के एक से अधिक पति न हो. अनेक चीनी घरानों में मियां बीवी में से कोई एक बौद्ध है तो दूसरा ईसाई या मुसलमान. सगे भाईयों में एक एक मज़हब का है तो दूसरा दूसरे मज़हब का. सब प्रेम के साथ मिल जुल कर एक घर में रहते हैं. धर्म के नाम पर राजकाजी या किसी तरह की भी पारटियां वहां देखने में नहीं आतीं.

अब ज़रा चीन की हकूमत को देखें. नई चीनी सरकार ने एक नया प्रोग्राम जिसे वह 'कामन प्रोग्राम' कहते हैं देश के सामने रक्खा है. इस प्रोग्राम में तीन बड़े उसूलों पर ज़ोर दिया गया है—ईमानदारी, सादगी और जनता की सेवा. इन्हीं तीन उसूलों पर चल कर नए चीन के हाकिमों और नेताओं ने देश की सारी मुसीबतों को हल कर डाला है. उन्होंने देश से घूस ख़ोरी, वेश्या पन और भीक माँगने के पेशे को मिटा दिया है. उन्होंने देश के ब्योपारियों और दस्तकारों की काया पलट कर दी है. चीज़ों में मेल मिलावट के तरीक़े और नाप तौल में बेईमानी जो तीन साल पहले वहाँ किसी देश से कम न थी आज एक पुरानी कहानी रह गई है. ईमानदारी उनका सबसे पहला उसूल है और सारा देश उस पर चलने की कोशिश कर रहा है. उनका दूसरा उसूल है सादगी. इस उसूल पर चल कर उन्होंने राज के बड़े बड़े नौकरों और अफ़सरों की तनख़ाहें एक दम कम कर दीं. नए चीन के वज़ीरों को लगभग ४५० रुपया महीना मिलता है और नए

चीन के राष्ट्र पति माओ-त्से-तुंग को लगभग ६०० रुपया महीना. यही हाल और सब महकमों का भी है. छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी तनख़ाहों में आम तौर पर एक और चार या एक और पाँच का औसत रह गया है. इस तरह नए चीन ने बड़े छोटे और अमीर ग़रीब के फ़रक़ को एक बड़े दरजे तक मिटा डाला. जनता की सेवा के उसूल पर चल कर उन्होंने सारे देश को मेहनती बना दिया. इन्हीं उसूलों की बरकत से नए चीन ने दो बरस के अन्दर वहाँ के ४७,५०,००,००० आदमियों की खाने, कपड़े और ज़िन्दगी की सब मामूली ज़रूरतों की कठिनाई को एक दम दूर कर दिया. नए चीन में आज इन सब चीज़ों की इफ़रात है. चारों तरफ़ ख़ुशहाली है.

चीन की दस्तकारियाँ भी बहुत दरजे तक हमने भारत की दस्तकारियों से मिलती हुई पाई. सूत और रेशम से कढ़े हुए कपड़े हमें भेंट किये गए जिन्हें देख कर बिलकुल लखनऊ की चिकन और बनारस की कामदानी की याद आ जाती है. रेशमी कपड़ों में जीती जागती तसवीरों का बुनना जो हूबहू फ़ोटो दिखाई दें, पीतल के बरतनों पर तरह तरह की नक़्क़ाशी, चीनी मिट्टी के बरतन और लकड़ी और हाथी दाँत से बारीक काम में मालूम होता है चीन भारत से बहुत बढ़ा चढ़ा है. हमने उनके चरखे देखे, करघे देखे और चीनी खद्दर के थान देखे. नया चीन तेज़ी के साथ बड़ी बड़ी मिलों की तरफ़ जा रहा है. फिर भी अभी तक चीन में जितना हाथ का कता और हाथ का बुना कपड़ा बनता और बिकता है उतना शायद हमारे देश में न मिलता हो, और चीनी सरकार इसमें ख़ूब मदद देती है. चीन की दूसरी गांव की दस्तकारीं भी ख़ूब तरक़्क़ी कर रही हैं, चीन के गाँव हमें बिलकुल भारत के गांव से दिखाई दिये सिवाए इसके कि लोगों में ईमानदारी, मेहनत की आदतें और एक दूसरे से प्रेम अधिक है.

चीन की पुरानी इमारतों को देख कर हमें बिलकुल भारत की पुरानी इमारतें याद आ गईं. पेकिंग में हमने पुराने मंदिरों के फाटक देखे जो हूबहू साँची के पत्थर के फाटकों से मिलते हैं. नामुमकिन है कि वह ढ ग भारत ने चीन से या चीन ने भारत से न लिया हो. पु राने महलों और मक़बरों में हमने वही भारत का मुग़ल ज़माने की इमारतों की तरह लम्बे लम्बे रास्ते, बीच में नहरें और फ़व्वारे, पानी के झरने और सावन भादों और उसी तरह की क्यारियाँ और रविशें देखीं जिस तरह की अपने देश में. चीन के ऊंचे गाजर की शकल के पैगोडा बिलकुल मदुरा और त्रिवेन्द्रम के मन्दिरों से मिलते हैं. केवल चीन की

रंगीन टाइल्स एक ख़ास चीज़ हैं जो भारत में दिखाई नहीं देती. उन टाइल्स को छाने में भी चीनी कारीगर जो गोलाई देते हैं और कंगूरे निकालते हैं वह भी एक अनोखी और बड़ी सुन्दर चीज़ है. हमें कुछ अचरज हुआ कि इस चीज़ की नक़ल अब तक भारत में क्यों नहीं हुई. शंघाई के नगर में ऐन बाज़ार के अन्दर हमने एक खंबे के ऊपर सम्राट अशोक का चार शेरों वाला वह चिन्ह देखा जो आज हमारे देश की नई सरकार का चिन्ह माना जाता है.

भारत के बहुत से फल और बहुत सी तरकारियाँ चीन में इफ़रात से होती हैं जैसे सेब, अनार, अंगूर, नाशपाती, केला, संतरा, चकोतरा, मोसम्बी, चीकू, लीची, कमरख, गन्ना, आलू, अरवी, फूल गोभी, पत्ता गोभी, बंद गोभी, गांठ गोभी, बैंगन, भिन्डी, गाजर, मूली, शलजम, मटर, टमाटर, शकरक़न्द वग़ैरा. इनके अलावा चीन में बहुत से और बढ़िया फल और तरकारियां होती हैं जो भारत में नहीं मिलतीं. आम सिवाय कैन्टन के और चीन में कहीं नहीं होता.

चीन में अधिक तर खेती बैलों से होती है. कुछ हिस्सों में ऊंट, घोड़े, गधे और भैंसे भी इस काम में लाए जाते हैं. बीच के और पच्छिम के हिस्से में गेहूँ बहुत और ख़ूब होता है. बाक़ी में चावल, मक्का, जवार, तिल, मूंगफली, सोया बीन वग़ैरा बहुत होते हैं. चीनी हमारी ही तरह बेलन से रोटी बेलते हैं. खानों की क़िस्में उनके यहां काफ़ी और बहुत अच्छी हैं. दूध और मक्खन काफ़ी मिलता है लेकिन घी का रिवाज नहीं है. खाना अधिक तर तिल या मूंगफली या सोया बीन के तेल में पकाया जाता है. चीनी खाने मज़ेदार होते हैं. अचारों का रिवाज भी ख़ूब है. एक दूसरे से मिलने पर चीनी उसी तरह हाथ मिलाते हैं, दोनों हाथों से मुसाफ़ा करते हैं और गले मिलते हैं जिस तरह हम भारत वासी. चीन में फूल बहुत होते हैं. पर गले की मालाओं का रिवाज हमने नहीं देखा. मालाओं की जगह मेहमानों को बड़े बड़े गुलदस्ते दिये जाते हैं. चीनियों को गाने बजाने का काफ़ी शौक़ है और एक दिन रात को हमने उन्हें ठीक माल कौश गाते हुए सुना.

चीन की औरतों में किसी तरह का परदा नहीं. औरतों और मरदों की पोशाक क़रीब क़रीब एक सी है और बहुत सादा. चीन की औरतें देश के सब कामों और सब आन्दोलनों में मरदों के साथ पूरा पूरा हिस्सा ले रही हैं. नेक चलनी पर नए चीन में बहुत ज़ोर दिया जाता है. अफ़ीम का खाना और पीना क़ानूनन बिल्कुल बन्द कर दिया गया है.

नए चीन की सरकार और वहां की जनता दोनों दुनिया के सब देशों के साथ शान्ति और दोस्ती से रहना चाहती हैं. वह किसी से लड़ना नहीं चाहते. सारी दुनिया की जनता के साथ भाईचारा बढ़ाने की तालीम नए चीन के हर बच्चे को दी जाती है. हिन्दुस्तान की सरकार और यहाँ की जनता भी दुनिया के सब देशो के साथ अमन से रहना चाहती है. चीन और भारत दोनों जहाँ तक बस चले दुनिया से युद्ध को मिटाना चाहते हैं. चीन और भारत दोनों सरकार की दोस्ती और दोनों देशों की जनता की बढ़ती हुई दोस्ती में इन दोनों देशों के भले के साथ साथ दुनिया की शान्ति, तरक़्क़ी और ख़ुशहाली का राज़ छिपा हुआ है.

चीन की आवाज़

पहली अक्तूबर १९५१ को नए चीन के लोकराज की दूसरी सालगिरह थी. चीन की कई संस्थाओं की यह इच्छा हुई कि हिन्दुस्तान व दूसरे देशों के डेलीगेशन इस ख़ुशी के मौक़े पर उनके साथ शरीक हों. इसलिये उन संस्थाओं ने, जिनमें पांच ख़ास हैं—कुल चीन पीस कौंसिल, कुल चीन फ़ेडरेशन आफ़ लेबर, कुल चीन डेमोक्रेटिक विमेन्स फ़ेडरेशन, कुल चीन डेमोक्रेटिक वर्कर्स फ़ेडरेशन और कुल चीन फ़ेडरेशन आफ़ लिट्रेचर एन्ड आर्ट सर्किल्ज़ ने नई दिल्ली वाले चीनी राजदूत के ज़रिये हिन्द जनता के एक डेलीगेशन के आने के लिये दावत नामा भेजा और यह इच्छा ज़ाहिर की कि इस डेलीगेशन में हिन्द-चीन दोस्ती संघ, कुल हिन्द पीस कौंसिल, ट्रेड यूनियन और विमेन हलक़ा के प्रतिनिधि, और हिन्दुस्तान के नामी विद्वान लेखक, साइन्सदां, शिक्षाशास्त्री वग़ैरा भी शामिल हों. यह दावत नामा सितम्बर के पहले हफ़्ते के आख़ीर में मिला था और दिल्ली से हवाई जहाज़ में रवाना होने की आख़िरी तारीख़ २० सितम्बर थी. इसलिये जल्दी जल्दी में सब इन्तज़ाम किया गया. फिर भी यह कोशिश की गई कि डेलीगेशन में सब सूबों के और तरह तरह की विचार धारा वाले लोग हों.

डेलीगेशन के १३ मेम्बर थे और २ सेक्रेटरी. चीन में हम लोग ४० दिन तक रहे. दक्खिन से लेकर उत्तर तक हमने चीन के सात बड़े बड़े शहर देखे—कैन्टन, पेकिंग, मुकडन, टिन्टसिन, नानकिंग, शंघाई और हांग-चू. हम नए चीन की यूनिवर्सिटियों, स्कूलों, कालिजों, निजी और सरकारी कारख़ानों, गांवों और बाज़ार हाटों में भी गए. हमने वहां की अदालतों को काम करते देखा, चीन के नए लोक संगठनों के काम करने के तरीक़ों को देखा समझा. हमने वहां के सिनेमा, थेटर, देहाती और दस्तकारी नुमायशें भी देखीं. हमारे ऊपर कोई पाबन्दी नहीं थी. हम जहां चाहें जा सकते थे, जो चाहें देख सकते थे. क्या सरकार, क्या जनता सभी हमारे साथ प्रेम और दिल खोल कर बात करते थे.

हमारे इस दौरे से एक ख़याल हर किसी के अन्दर पैदा होता है. वह यह कि क्या हम हिन्दुस्तान के लोग भी नए चीन से कोई सबक़ सीख सकते हैं, और अगर सीख सकते हैं तो वह सबक़ क्या है और उससे किस तरह देश की हालत को संभाला जा सकता है.

चीनी लोग नए लोकराज के क़ायम होने को 'आज़ादी' (लिबेरेशन) नाम से पुकारते हैं. आज़ादी के पहले वहां पर कोमिनटांग पारटी का राज था जिस के सिरमौर जनरल चियांग काई शेक थे. उस सरकार की राय थी कि चीन की बढ़ती हुई आबादी की ज़रूरत के मुताबिक़ यहाँ अनाज नहीं पैदा होता और इसलिये अनाज बाहरसे मंगाना चाहिये. सच यह है कि विदेश से, ख़ास कर अमरीका से, करोड़ों मन ग़ल्ला आया करता था. तिस पर भी देश के किसी न किसी हिस्से में अकाल पड़ता था या खाने की कमी की शिकायत रहती थी. कुछ इलाक़ों में बाढ़ की वजह से खेती करना नामुमकिन था. दूसरों में पानी न बरसने की वजह से बंटाधार हो जाता था. फिर ऊपर से सवारी की दिक़्क़त थी जिसकी वजह से मुसीबत ज़दा लोगों की मदद के लिये आनाज इधर से उधर आसानी से आ-जा नहीं सकता था.

आज़ादी के पहले चीन में काग़ज़ी नोटों की इतनी भरमार कि थी सन १९३९ वाली लड़ाई के पहले जितने नोट ज़ियादा चलते थे उसके मुक़ाबले १७७० खरब गुने नोट ज़ियादा चलने लग गए थे. सन १९४० और १९४८ के बीच की इस हालत की यह जानकारी हमें चीन के पीपुल्स बैंक के मुखिया से ही मिली है. चीज़ों के भाव इतनी शिद्दत से बढ़ गए थे कि सुनकर तबियत दंग रह जाती थी. लड़ाई के पहले अगर किसी आदमी का सौ इकाई से काम चलता था तो उस वक़्त १३८८४००० खरब इकाइयां चाहिये थीं. इसका मतलब यह है कि अगर किसी के पास दस हज़ार चीनी डालर होते तो उससे वह दियासलाई की एक काटी भी नहीं ख़रीद सकता था, पूरी दियासलाई की पेटी की तो बात ही क्या. इसके अलावा, लोगों का कहना है कि उस ज़माने में चीन के जैसे घूसख़ोर हाकिम दुनिया में और कहीं मुश्किल से थे. बड़े बड़े कारख़ाने वाले, फ़ौजी सामान का व्योपार करने वाले, ज़मींदार और रईस लोग ऐश-आराम करते थे और भोग-विलास की ज़िन्दगी बिताते थे, लेकिन लाखों करोड़ों ग़रीबी और बेकसी में पिसे जा रहे थे. इसका ज़रूरी नतीजा यह था कि बेरोज़गारी, वेश्या पन और भिकमंगी का देश भर में बोल बाला था.

१९४९ में जब नई सरकार ने राज संभाला तो पहला इरादा उसने यह किया कि देश में से ग़रीबी ख़त्म करके अनाज की पैदावार बढ़ाई जाए. नई सरकार ने देखा कि चीन की साढ़े सैंतालीस करोड़ आबादी में इकतालीस करोड़ से ऊपर किसान हैं, जिनका एक मात्र सहारा खेती है. लेकिन ज़मीन की सारी मिलकियत १० फ़ीसदी ज़मींदारों या रईस किसानों के हाथ में थी. बाक़ी ९० फ़ीसदी ग़रीब

किसान या बे-ज़मीन वाले मज़दूर थे. चीन में खेती के लायक़ १४० करोड़ (क़रीब २४ करोड़ एकड़) ज़मीन में से ८० फ़ीसदी ज़मींदारों और रईस किसानों के हाथ में थी, बाक़ी २० फ़ीसदी ग़रीब किसानों और खेती मज़दूरों में बंटी हुई थी, जिनकी तादाद कुल खेती आबादी की ६० फ़ीसदी के क़रीब थी.

नया ज़मीन सुधार.

नई सरकार ने ठान लिया कि यह अंधाधुंदी तो ख़त्म ही होना चाहिये. 'नया ज़मीन सुधार क़ानून' पास किया गया जिसके मुताबिक़ ज़मींदारों के पास की सारी बेशी ज़मीन उनसे लेकर बेज़मीन वाले खेती मज़दूरों में बांट दी गई. लेकिन नए हाकिमों ने यह एहतियात रखी कि किसी ज़मींदार को रोज़ी के साधनों से महरूम न किया जाए ताकि वह अपने बाल-बच्चों का पेट पाल सके. हर ज़मींदार के पास कम से कम इतनी ज़मीन छोड़ दी गई जितनी एक मामूली किसान को दी जाती थी. कभी कभी उससे ज़ियादा ज़मीन भी ज़मींदार को दे दी गई जिससे वह बड़े मज़े में अपनी और अपने बाल बच्चों की परवरिश कर सकता है. ज़ेवर या नक़दी जिसके पास जो कुछ था रहने दिया गया. इसके अलावा अगर किसी किसी ज़मींदार के पास कोई कारख़ाना था या वह कोई धन्दा करता था तो उसमें भी हाथ नहीं लगाया गया. यही नहीं, सरकार ने ऐसे कामों में पुराने ज़मींदारों की मदद की और उनका हौसला बढ़ाया.

चीन के नए हाकिम इस ज़मीन सुधार क़ानून को अपनी नई अर्थ-व्यवस्था की बुनियाद मानते हैं. यह सब करिशमा सरकारी हाकिमों या हुक्म नामों के ज़रिये से नहीं किया गया। बल्कि गांव वालों ने ख़ुद अपने आप किया. वह जमा हो कर आपस में तय कर लेते थे कि अपने इलाक़े में ज़मीनें सुधार के सिलसिले में क्या किया जाए और ज़मीनें कैसे तक़सीम की जाएं. इस क़ानून की बदौलत आज चीन में ३० करोड़ बेज़मीन वाले मज़दूर ज़मीन के मालिक बन गए हैं और ठाठ से अपनी ज़मीन पर खेती कर रहे हैं. उम्मीद की जाती है कि १९५२ के जून तक यह खेती सुधार सारे चीन में पूरा किया जा सकेगा.

अपने यहां की खेती की पैदावार संभालने के लिये सरकार ने दूसरी चीज़ जो की वह थी लगानबन्दी की हालत ठीक करना. आज़ादी के पहले लगान नक़दी शकल में लिया जाता था, लेकिन अब अनाज की शकल में लिया जाता है पहले लगान पैदावार के तख़मीने के आधे से कम नहीं लिया जाता था. कभी कभी तो पूरी की पूरी पैदावार लगान में खप जाती थी और बेचारे किसान को रोज़ी के लिये दूसरा धंदा खोजना पड़ता था. लेकिन नए निजाम में सरकार ने यह मक़र्रर कर

दिया है कि लगान असल पैदावार का १३ फ़ीसदी से ज़ियादा न होगा. पेकिंग के मेयर ने हमें बताया कि लगान में इस कमी कर देने का नतीजा यह हुआ कि दो करोड़ टन गल्ला हमारे किसानों को उनके इस्तेमाल के लिये एक साल में बच गया.

नई सरकार ने इस सिलसिले में तीसरा क़दम जो उठाया वह था सिंचाई के साधनों में सुधार करना. बहुत सी ज़मीनें ऐसी थीं जहां ज़ियादा काश्त तभी हो सकती थी जब कि नए नए कुएं खोदे जाएं और पानी इतमिनान के साथ मिलता रहे. सरकार ने इसके लिये हुक्म दे दिया और लाखों कुएं जगह जगह खुद गए. इस काम में सरकार की तरफ़ से बहुत बड़ी सी मदद और उभार की ज़रूरत थी. गांव वालों ने सामान अपने पास से लगाया, मेहनत अपने आप की. इसी तरह सरकार ने उन जगहों से पानी निकालने की स्कीमें बनाई जहां अकसर बाढ़ आया करती थी. इस पानी को उन हिस्सों की तरफ़ भेज दिया गया जो अकसर सूखे पड़े रहते थे. यह काम भी गाव वालों की मदद से किया गया. सिर्फ़ ऊपर से सरकारी देख भाल रही. छोटी स्कीमों के अलावा हुआई नदी को बांधने वाली जैसी बड़ी स्कीमों में भी सरकार ने ज़ियादा तर गांव वालों से ही मदद ली. इस हुआई नदी योजना की शुरूआत नवम्बर १९५० में की गई. इस योजना में ३० लाख किसानों ने हिस्सा लिया जिन्होंने नवम्बर १९५० से शुरू करके जुलाई १९५१ तक क़रीब १९ करोड़ ५० लाख मीटर मिट्टी हटा फेंकी और नदियों को थामने के लिये जगह जगह हौज़ और कुन्ड बना लिये. इसका नतीजा यह हुआ कि साढ़े पाच करोड़ आदमी (जो लगभग हमारे उत्तर प्रदेश की आबादी के बराबर है) बाढ़ की आफ़त से हमेशा के लिये बच गए. अभी हाल ही में इस इलाक़े में जो पहली बार फ़सल हुई उसे देख कर हर किसी का जी बांसों उछल पड़ता था. यह बात ध्यान देने की है कि इन स्कीमो के लिये चीन के नए नेताओं ने बाहर से एक पैसा भी उधार नहीं लिया. उन्होंने सब काम अपनी जन शक्ति के बल पर किया. हर कोई जो ज़रा नज़दीक से इन चीज़ों को देखता है वह महसूस करता है कि किस जोश व लगन के साथ इन लोगों ने अपना जी-जान लगा दिया. उन्हें ख़ुशी होती हैं कि हमने अपने देश की ख़ातिर कुछ काम किया. नए चीन के नेता और उनके बेलाग गार्यकर्ताओं ने क्या कमाल के साथ जन-जागृति का काम किया है. यह उन्हीं की मेहनत का फल है कि लोगों के अन्दर मेहनत और क़ुरबानी की भावना घर कर गई है. कहने की ज़रूरत नहीं कि बिना इस भावना के ऐसे काम हुआ भी नहीं करते हैं.

नए चीन में तनख़ाहें.

नई चीन सरकार ने चौथी ख़ास बात जो की वह थी हकूमत के ख़र्च को घटाना. आज़ादी के पहले ज़ियादातर अफ़सरों को ऊंची तनख़ाहें मिलती थीं और बेतहाशा ख़र्च होता था. नई सरकार ने जहां ऊपर के हाकिमों की तनख़ा कम की, वहां नीचे वालों की बढ़ा दी. ऐसा लगता है कि नए चीन के नेताओं को यह सूझ गई कि रुपए पैसे का महत्व ज़ियादा नहीं होता और इनसान, की मेहनत ही असली क़ीमती और क़द्र के क़ाबिल चीज़ है. इसी वजह से नए चीन में तनख़ाहें नोटों के हिसाब से नहीं बल्कि अनाज के हिसाब से दी जाती हैं.

सरकारी नौकर दो तरह के हैं—एक वह जिन्हें 'सपलाई तरीक़े' पर तनख़ा मिलती है, दूसरे वह जिन्हें बाक़ायदा तनख़ा मिलती है 'सपलाई तरीक़े' में नौकर और उसके बाल बच्चों को भर-पेट खाना और ख़ास तादाद में कपड़े मिलते हैं. उसके बच्चों को तालीम मुफ़्त, घर बार को दवा-दारू माफ़ और जेब ख़र्च के लिये दस-बीस रुपए हर महीने ऊपर से मिलते हैं. इस सपलाई तरीक़े में सूबे के एक गवर्नर या दफ़्तर के क्लर्क में कोई फ़र्क़ नहीं किया जाता है. दूसरे यानी तनख़ा वाले तरीक़े में सरकारी लोग अन्दाज़ा कर लेते हैं कि फ़लां नौकर और उसके बाल-बच्चों को कुल कितने अनाज की ज़रूरत होगी, कितना दूध, दवा, कपड़ा वग़ैरा की और सब को जोड़ कर "इकाई" बना लेते हैं. इस तरह वह तय कर लेते हैं कि फ़लां आदमी को हर महीने कितनी 'इकाईयां' या 'पाइन्ट' मिलने चाहियें. असली रक़म की अदायगी ग़ल्ले की क़ीमत के बराबर नोटों की शकल में न की जाकर ग़ल्ले की क़ीमत के बराबर नोटों की शकल में जाती है. अगर किसी महीने चीज़ों के भाव बदले तो उस महीने की तनख़ा भी उस हिसाब से बदल जाती है.

अब ज़रा देखें कि हमारे हिन्दुस्तानी सिक्के के हिसाब से चीन के सरकारी अफ़सरों को क्या तनख़ाहें मिलती हैं. चीन में सब से ऊंची तनख़ा ६०० रुपए के क़रीब है जो चेयरमैन माओ-त्से-तुंग को मिलती है. सेन्ट्रल केबिनेट के मिनिस्टरों को ४४० रुपए मिलते हैं. सरकारी कारख़ानों, फ़ौज, यूनिवर्सिटी, स्कूल, कालिज, दफ़्तरों वग़ैरा में आम तौर पर सब से ऊंची तनख़ा साढ़े तीन सौ रुपए है और सब से कम डेढ़ सौ. यही सूरत निजी कारख़ानों और दफ़्तरों में भी है. कुछ ही माहिर या ख़ास तालीम पाए ऐसे लोग हैं जिन्हें तनख़ा के अलावा एक तिहाई ऊपर से भत्ते के तौर पर मिल जाता है. इस चीज़ से जहां एक तरफ़ सरकारी ख़र्च बहुत कम हो गया, वहां दूसरी तरफ़ ज़ियादा तनख़ा वालों और कम तनख़ा वालों के

बीच की खाई बहुत कुछ पट गई, ग़रीब अमीर का फ़र्क़ दूर हो गया और समाज के अन्दर जो मालदार और नादार के बीच की दीवार थी वह एक दम ढह गई. इसका नतीजा है कि नए चीन में आप सिर्फ़ कपड़ों को देखकर यह नहीं पहचान सकते कि एक आदमी यूनिवर्सिटी का वाइसचांसलर है या चपरासी, कारख़ाने का मैनेजर है या मज़दूर, दफ़्तर का इन्चार्ज है या क्लर्क. यह बात याद रखने की है कि यह क़ुर्बानी जो सब लोगों ने की—लेकिन असल में यह क़ुर्बानी नहीं है क्योंकि अपनी बुनियादी ज़रूरत की सब चीज़ें सब को मिल ही जाती हैं—तो ख़ुशी से की, दिल से की, जानकर की. हर चीनी को नाज़ है कि मैं अपने देश और देशवासियों के लिये कुछ न कुछ कर रहा हूं.

सवारी.

इसके अलावा नए चीन ने अपने यहा सवारी और माल ढोने का इन्तज़ाम बहुत कुछ संभाल लिया है जो कोमिनटांग राज में चकना चूर हो गया था. १९५० के आख़ीर में ७२ हज़ार किलो मीटर सड़कें जो मरम्मत या बन्दोबस्त न होने की वजह से बन्द और बेकार पड़ी थीं फिर से चालू हो गई. बड़े पैमाने पर नई नई लाइनें खोल दी गई हैं. कहा जाता है कि आज़ादी के पहले जितनी सड़कें-रेलें वग़ैरा थीं जनवरी १९५१ में उस से पांच गुना ज़ियादा हो गई. डाक के रास्ते ६० फ़ीसदी बढ़ाए गए, तार ३६ फ़ीसदी, टेलीफ़ोन पहले के मुक़ाबले सवा दो गुने ज़ियादा हैं. हवाई रास्ते का भी काफ़ी इस्तेमाल होता है.

स्वावलम्बन.

इन तरीक़ों से और दूसरे ऐसी ही बातों से नए चीन में मंहगाई और क़ीमतों के घटाव-बढ़ाव पर क़ाबू पा लिया, खेती और कारख़ानों की पैदावार बढ़ा ली और लोगों का माद्दी और नैतिक दर्जा कहीं ज़ियादा ऊंचा उठा दिया. आज़ादी के पहले एक अमरीकन डालर की क़ीमत जहां कई अरब खरब चीनी यन होती थी वह १९५० में ४२,००० यन और १९५१ में २२,२७० यन रह गई. मार्च १९५० से लेकर मई १९५० तक-तीन माह के अन्दर क़ायदे के साथ क़ीमतों को ठिकाने पर लगा दिया गया जिस की वजह से चीज़ों के औसत दाम १०० से गिर कर ६८ पर आए और अब और भी गिर रहे हैं. इसके ख़िलाफ़ इस अरसे में अमरीका में यह दाम १०० से बढ़कर १५० हो गए.

चीन के मुख़्तलिफ़ हिस्सों में लोगों की चीज़ें ख़रीदने की ताक़त ३० से ५३ फ़ीसदी तक बढ़ी है. पिछले दो साल में उत्तर-पूर्वी चीन में–जिसमें पांच सूबे हैं—

किसानों की चीज़ ख़रीदने की ताक़त ६९ फ़ीसदी बढ़ी. नई सरकार ने १९४९ में चार्ज लिया और १९५० में देश की काया पलट गई. उसी साल अनाज की खेती इतनी बढ़ी कि देहात के साढ़े पच्चीस करोड़ लोग, शहरों के आठ करोड़ और पिछले साल के अकाल कहलाने वाले इलाक़े के चार करोड़ लोगों को खिला कर इतना अनाज बेशी बचा कि साढ़े चार करोड़ लोग साल भर तक और खाते रहें. १९५० में पिछले बरस के मुक़ाबले कुल पैदावार चौदह फ़ीसदी ज़ियादा थी, और १९५१ में १९५० के मुक़ाबले आठ फ़ीसदी ज़ियादा. तख़मीना यह है कि १९५१ के आख़ीर में चीन के पास इतना अनाज होगा कि अपनी कुल आबादी को खिलाकर और अगली फ़सल के लिये काफ़ी जमा रखकर, उसके पास इतना अनाज बचेगा कि दस करोड़ आदमियों को एक साल तक खिलाता रहे. एक बात यह भी क़ाबिल-तारीफ़ है कि नए चीन में हर सिपाही रोज़ सात आठ घन्टे खेती का या दूसरा धन्दा करता है. सिर्फ़ वह सिपाही जो असली मोरचे पर लड़ते हैं इस खेती के काम से बरी रहते हैं. इस से न सिर्फ़ फ़ौज का ख़र्च घटता है बल्कि खेती की पैदावार बढ़ती है और सिपाही और ग़ैर सिपाही में आपस का भाई चारा क़ायम रहता है.

कारख़ाने.

खाने के अलावा ज़रूरत की क़रीब क़रीब दूसरी सभी चीज़ों में चीनी लोग इन दो बरस में स्वावलम्बी हो गए हैं. इस सिलसिले में उन्होंने जो एक ख़ास तरीक़ा अपनाया है, वह है एमुलेशन ड्राइव यानी होड़ बाज़ी. वह मज़दूर या कारीगर जो ख़ास तौर से ज़ियादा पैदा करते हैं या अपने काम में कोई नई ईजाद करते हैं उनकी बहुत वाह वाही होती है और सारे देश में उनके नाम का प्रचार किया जाता है और वह 'आदर्श कार्यकर्ता', 'मज़दूर बहादुर', सूबाई मज़दूर' बहादुर या 'कुल चीन मज़दूर बहादुर' के नाम से मशहूर होते हैं.

चीनी नेता अपने देश में कारख़ाने फैलाने की भरसक कोशिश कर रहे हैं. साथ ही साथ वह इतने व्यवहारिक भी हैं कि अपने यहां किसी आदमी को निठल्ला नहीं रहने देते. अपने यहां के देहाती धंदों को उन्होंने ध्यान के साथ संभाल लिया है. पेकिंग राजधानी में एक बाज़ार का बाज़ार ऐसा है जहां रोज़ सुबह छै से नौ बजे तक सिर्फ़ हाथ का बुना कपड़ा मिलता है. सूत कुछ हाथ का होता है और कुछ मिल का. चीनी लोग हथ-कते और हथ-बुने कपड़े को "थुपु" कहते हैं. डाक्टर कुमारप्पा, मैं और कुछ भाई उनके गांव में गए जहां हमने उनके चरख़े व

करघे चलते देखे. हमने देखा कि उनकी चीज़ें हमारे यहां के मुक़ाबले ज़ियादा सीधी-सादी हैं. शंघाई में हमने एक जगह देखा कि पुराने ढंग के २०० चरखों पर ख़राब और बेकार ऊन को कात कर सूत तैयार कर रहे हैं. हमारे मेज़बानों को जब पता चला कि हमें हाथ की कती और हाथ बुनी चाज़ों में दिलचस्पी है तो हमारे मिशन के हर मेम्बर को चीनी खादी के दो-दो थान भेंट दिये गए.

आज चीन में खाने पीने की हर चीज़ काफ़ी तादाद में मिलती है और ऐसे दाम पर कि हर कोई ख़रीद सके—न दाम का कन्ट्रोल है, न कपड़े या अनाज की वहां राशनिंग है. वहां के ट्रेड यूनियन भाव को ठीक रखते हैं. न कोई भिक भिक होता है, न चोर बाज़ारी करता है न कोई जमा कर लेता है. सट्टे बाज़ी सरकारी हुक्म से बन्द कर दी गई क्योंकि यह बनावटी तौर पर क़ीमतें घटाती बढ़ाती है.

समाज सुधार.

अब हम उन समाज सुधारों पर विचार करेंगे जो नई सरकार ने किये. पेकिंग के बारे में यह कहा जाता है कि जब नई सरकार ने चार्ज लिया तो वहां तीन हज़ार वेश्याएं थीं, लेकिन आज एक भी नहीं है. यही हाल दूसरे शहरों और क़सबों में भी था. नई सरकार ने इतने बड़े देश से वेश्यापन मानो एक दम उठा ही दिया. यह सुधार भी कोई सरकारी हुक्मनामे से नहीं किया गया, न मजबूरी या ज़बरदस्ती से, बल्कि समझा बुझा कर और लोगों की मरज़ी से. नायब बड़े वज़ीर को-मो-जो ने हमें बताया कि किस तरह उन सब बहनों को समझा बुझा कर, दस्तकारी सिखाने के नए नए दरजे खुलवा कर, जहां वह अपनी रोज़ी इज़्ज़त के साथ कमाने का ज़रिया निकाल लें, और इज़्ज़त वाले लोगों से उनकी शादी करके उन्हें सही रास्ते पर लाया गया. इसी तरह से नए चीन ने भिकमंगी ख़त्म कर दी. पहले के सारी भिकारी आज किसी न किसी पैदावारी प्रोग्राम में काम कर रहे हैं. आज चीन में बे-रोज़गारी नहीं है. जब हमने पेकिंग के मेअर से पूछा—"कहिये, आपके यहां आबादों का मसला कैसा है." उन्होंने मुस्करा कर जवाब दिया—"हमारे यहां आबादी का मसला है ही नहीं. आप चाहें तो कुछ भाई बहनों को यहां भेज दीजिये."

शहरों में मकान या रहने सहने की पूरी सुविधा है. अफ़ीम खाना या पीना मुल्क भर में मना है. किसी तरह का जुआ, सट्टा या रेस कोर्स वहां नहीं खेले जा सकते. शादी का जो नया क़ानून बना है वह वहां की एक ख़ास चीज़ है. उसके आधार पर औरतों को बराबर के हक़ मिल गए हैं, उनका दर्जा ऊंचा उठ गया

है और एक मर्द औरत की सिर्फ़ एक शादी का चाल पड़ गया है. शादी के सिलसिले में पैसे का लेन देन एक दम बन्द हो गया है. आज वहां के समाजी या जीवन के दूसरे किसी पहलू में औरतें मर्दों के बराबर का हिस्सा लेती हैं. टेनसिन से पेकिंग जाने वाली एक रेल है जिस में ड्राइवर से लेकर गार्ड तक सभी चलाने वाले औरतें हैं.

हमने नए चीन के सिनेमा और थेटर देखे. उनसे काफ़ी तालीम हासिल की जा सकती है, और ज़ियादा तर में जागीरशाही, पूंजीशाही व साम्राजशाही की बुराइयां दिखाई जाती है. इन ख़राब शाहियों के मुक़ाबले चीनी लोग अपनी एक नई शाही पेश करते हैं जिसे उन्होंने "क़ौमी पूँजीशाही" नाम दिया है और उसकी तरफ़ लोगों की दिलचस्पी बढ़ाते हैं. यहां की फ़िल्मों में मर्द औरत के बराबरी के हक़ पर बेहद ज़ोर दिया जाता है, मेहनत को सबसे बुलन्दी का दर्जा दिया जाता है और तमाम दुनिया के रहने वालों की एकता का विचार फैलाया जाता है. देखने वालों के दिल व दिमाग़ पर असर करने वाली और बहुत सी चीज़ें होती हैं. लेकिन किसी भी फ़िल्म में कोई ऐसी बात हमें नही मिली जिसे गन्दी या भद्दी कहा जा सके

अदालतें.

नए चीन ने अपनी अदालतों को एक दम बदल दिया है. उनके यहां तीन तरह की अदालतें होती हैं, जैसे हमारे यहां ज़िला आदलत, सूबा हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट हैं. पच्छिमी ढंग की वकालत का तरीक़ा चीन में रह ही नहीं गया. वकील और बेरिस्टर नदारद हैं. जज फ़रीक़ों या गवाहों से खुद आमने सामने बात करते, मामले की जांच करते, मौक़ा महल जा कर देखते और फिर फ़ैसला देते हैं. अगर ज़रूरत पड़ी तो कुछ क़ानूनी माहिरों से मदद लेते हैं. इन क़ानूनी माहिरों को "जनता के हक़ों के रखवाले" कहा जाता है. इन्हें सरकार से तनख़ा मिलती है. यह लोग किसी भी पारटी से एक पैसा भी नहीं ले सकते. नतीजा यह है कि नए चीन में इन्साफ़ सस्ता होता है, जल्दी होता है और सच्चा होता है. यह चीज़ शायद ही किसी दूसरे देश में मिले.

चीन में धार्मिक आज़ादी पूरी तरह से मिलती है. हमने कई जगह पर मस्जिदें, गुरुद्वारे और मन्दिर देखे जहां लोग आज़ादी के साथ पूजा बन्दगी कर रहे थे. लेकिन बदक़िस्मती है कि चीन में जो मज़हब या बोल चाल की आज़ादी है उसके बारे में अजब अजब ग़लत फ़हमियां फैली हुई हैं. इसलिये हम चीनी विधान की

पांचवीं धारा को यहां पेश करते है जिससे पता चलता है कि यह ग़लत फ़हमी कितनी बेजा है—

> "चीनी लोकराज में लोगों को विचार, बोलचाल, प्रकाशन, मिलना जुलना, चिट्ठी-पत्री, रहन-सहन, आने जाने, धार्मिक मत, जलूस निकालने और प्रदर्शन करने-कराने की आज़ादी रहेगी"

नए चीन की सरकार कम्यूनिस्ट सरकार नहीं है न यह पारटी सरकार है. यह दर असल मिली-जुली (कोआलीशान) सरकार है जिसमें सभी राजकाजी पारटियों के नुमायन्दे शरीक है. सरकारी हाकिमों में सिर्फ़ एक तिहाई ऐसे है जो कम्यूनिस्ट पारटी से ताल्लुक़ रखते है.

सारे चीन में निजी जायदाद रखने का हक़ माना जाता है और निजी जायदाद लोग रखते भी है. निजी व्योपार, लेन देन और कारखानों को तरक़्क़ी दी जाती है. हमने देखा कि टिंटसिन, शंघाई और दूसरी जगहों पर अंगरेज़ी कम्पनियां खूब व्योपार कर रही हैं. अगर नया चीन कम्यूनिस्ट है तो उसका कम्यूनिज़्म 'चीनी कम्यूनिज़्म' है जो उसकी तासीर के मुताबिक़ है और वहां के लोगों के रिवाज से मेल खाता है.

तीन गुन.

नए चीन में तीन गुनों पर खास ज़ोर दिया जाता है—"ईमानदारी, सादगी और देश की सेवा." इन तीनों को चीनी विधान में खास तौर से शामिल किया गया है. बाहर से आने वाला कोई भी बेलाग आदमी चीन को देख कर यह महसूस करेगा कि क्या यहां की जनता और क्या सरकार, सब के सब फ़िल हाल एक साथ मिलकर इन तीनों गुनों पर अमल करने पर तुल गए है. नए चीन के क़ौमी स्वभाव, दिल और दिमाग़ की बुनियादी इन्हीं तीन अटल चट्टानों पर क़ायम है.

आज कल चीन कोरिया से लड़ाई लड़ रहा है. तिस पर भी चीन में हमने लड़ाई की चर्चा बहुत ही कम सुनी. चीन का आर्थिक संगठन लड़ाई को निशाना बना कर नहीं खड़ा किया गया है बल्कि रोज़ की ज़रूरत की चीज़ों को पैदा करने के इरादे से खड़ा किया गया हैं. मुकडन के शहर में, जो लड़ाई के हलक़े के नज़दीक था, हमने देखा कि करोबार बदस्तूर चल रहा है. चीन में लड़ाई के शौक़ीन लोग है ही नहीं. नये चीन और उस के नेता दुनिया के हर दूसरे मुल्क के साथ मिल कर और शान्ति के साथ रहना चाहते हैं. चीन के पिछले दो बरस के कारनामों को देख कर हर कोई इसी नतीजे पर पहुँचेगा कि नए चीन के महान और प्यारे

माओ-त्से-तुंग केवल एक बहादुर सिपाही ही नहीं हैं बल्कि एक रचनात्मक जौहरी भी हैं.

चीन की तरह से हिन्दुस्तान भी दुनिया के हर देश के साथ मिल कर शान्ति से रहना चाहता है हमारे प्रधान मंत्री ने राष्ट्रों के बीच रखने की ख़ातिर कोई क़दम उठा नहीं रखा. हिन्दुस्तान और चीन की आबादी मिलकर दुनिया के एक तिहाई से ज़ियादा होती है. पक्की और सच्ची बात है कि हिन्दुस्तान और चीन के बीच एक असली और पाएदार मेल दुनिया के अन्दर अमन-शान्ति क़ायम रखने की सब से बड़ी ज़मानत है.